शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 14 | उदयपुर सोमवार 01 अगस्त 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रु.

शैल की संगीतमय प्यार की कहानी 'दिल दी दुआ' लांच
दर्द का दिल से वैसा ही रिश्ता जैसा संगीत का सुननेवालों से : शैल ओसवाल

उदयपुर। जाने माने पोप-गायक शैल ओसवाल का मानना है कि दर्द का दिल से वैसा ही रिश्ता है जैसा संगीत सुननेवालों से है। यदि दिल से दर्द को भी बया किया जाय तो वह हर किसी के मन में उतर जाता है और यही उनके गीतों की खास बात है। यह बात शैल ओसवाल ने उनके नये गीत 'दिल दी दुआ' के लांचिग अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में कही। इस अवसर पर शैल ने तूही जिंद मेरी है और दिल दी दुआ गीत गाकर भी सुनाया।

शैल ने कहा कि उनका हर गीत मोहब्बत की एक कहानी लिए होता है और पहलीबार 'दिल दी दुआ' पंजाबी बोल और धुन के साथ राजस्थानी रंग में रंगी हुई प्यार की कहानी है। इस गाने की कहानी निश्चित तौर पर लोगों के दिलों में राज करने में कामयाब होगी। शैल पोप सिंगर और एक्टर के तौर पर खुश हैं और वे अच्छे संगीत में विश्वास करते हैं। 'दिल दी दुआ' उनकी एक ऐसी ही कोशिश है जिसमें छोटे कस्बे के युवा धड़कनों की प्यार की कहानी प्रदर्शित होगी। इस कहानी में नायक-नायिका के मिलन से लेकर शादी तक का सिक्वल होगा। शैल ओसवाल ने बताया कि इस वीडियो में उनके साथ कई स्थानीय कलाकार भी होंगे। उन्होंने कहा कि उनका राजस्थान से पुराना रिश्ता है और इसलिए इस वीडियो को यहां सूट किया जा रहा है।

शैल हमेशा साधारण कर्णप्रिय संगीत को तवज्जों देते आए हैं जिसमें रियलटी और लिरिक्स महत्वपूर्ण होते हैं। किशोर कुमार, सोनू निगम और पाकिस्तानी गायिका नादिया हसन को पसंद करने वाले शैल ओसवाल के पिछले प्रख्यात गानों को, जैसे जाना,

दिल-की-बातें, अभी-अभी, ज़िंदगी, हीरिए, तेरी याद में और सदाबहार सोणीये हीरिए जिन गानों में उन्होंने अपने संगीत की जान ड़ाली है, संगीत प्रेमियों ने इन्हें खूब पसंद किया है। शैल ने कहा कि मां और देशभक्ति पर भी वे इसी तरह का गीत बनाना चाहते हैं।

'दिल दी दुआ' के निदेशक सावंत घोष ने बताया कि इस गीत का वीडियो मांझी का मंदिर, बड़ी तालाब सहित उदयपुर के प्रमुख रमणीक स्थलों के साथ ही बम्बोरा के निकट करणी फोर्ट और स्थानीय बाजार में फिल्माया गया। इस गाने की रचना उज्वल संगीतकार विद्युत गोस्वामीजी ने की है जबकि इसके बोल रवि बेसनेट ने लिखे है। इस गीत के वीडियो में शैल ओसवाल के साथ वैभवी जोशी को-एक्टर होंगी।

डायरेक्टर अमरजीतसिंह ने कहा कि शैल के लाखों चाहक हमेशा संगीतमय और रुमानी दावत के लिए उत्सुक रहते हैं जो संगीत प्रेमियों को अपनी स्वप्नगरी में ले जाती है, और दिल दी दुआ उनमें से एक है। इस जादुई गीत का चित्राकन राजस्थान में उदयपुर के शाश्वत सौदर्य में किया जाएगा।

मंगल ज्योति बुझ गई

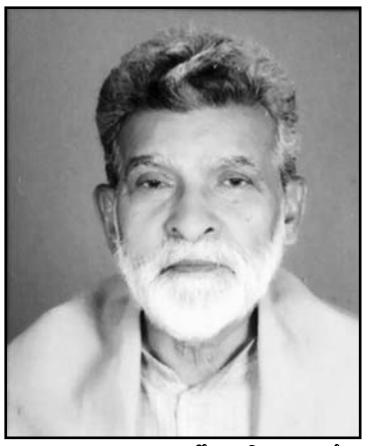

प्रमुख नाट्यकर्मी साहित्य सर्जक मंगल सक्सेना का 29 जुलाई प्रात: निधन हो गया। 14 मई 1936 को बीकानेर में जन्मे सक्सेनाजी से मेरा परिचय 1955 में ही हो गया था जब वे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के साथ रामपुरिया जैन इंटर कॉलेज में अध्ययनरत थे। ओंकारश्री उनके साथ थे। मैं जब बीकानेर पहुंचा तो साहित्य के समग्र क्षेत्र में इन त्रिविभूतियों का दबदबा देख दंग रह गया। तीनों अच्छे कवि, वक्ता, लेखक तथा पढ़नेवालों में अव्वल थे। वहीं मेरी साहित्यिक अभिरुचि को बल मिला। कवि सम्मेलनों में मुझे भी इनके साथ कविता पढ़ने का अवसर हाथ लगा और इनके कारण मेरा भी सहज सब ओर साहित्यिक जुड़ाव हो गया।

मंगलजी प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। कवि-मंचों पर वे ओज और हुंकार भरी कविताओं के लिए जाने गये। आगे जाकर उनके दो काव्य-संग्रह- 'मैं तुम्हारा स्वर' तथा 'कपट का सीना फाड़ो' प्रकाशित हुए।

कविता-स्वर के साथ-साथ मंगलजी का जीवन-स्वर भी वैसा ही हो गया था। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि मंगलजी और ओंकारजी दोनों ने उदयपुर को अपना कार्य-क्षेत्र चुना जो उनको रास भी आया। यहां मेरा उनका निरंतर संपर्क बना रहा। मंगलजी का काव्य-स्वर यथावत रहा किंतु प्रमुखत: उन्होंने नाट्य निर्देशन तथा नाट्य प्रयोगी का क्षेत्र चुना। इस क्षेत्र में उन्होंने कई अच्छे कलाकार-अभिनेता जोड़े और जो प्रयोगधर्मी प्रस्तुतियां दीं उसके कारण उन्हें अकल्पनीय सफलता, सम्मान और प्रशंसा मिली।

उनका प्रमुख जुड़ाव जनुभाई से रहा। उनके अध्यक्षीय काल में सन् 1964 से 67 तक मंगलजी सचिव पद पर रहे। बाद में जब वे सन् 1984 से 87 तक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष बने तब भी उन्होंने उदयपुर नहीं छोड़ा। मैंने उन्हें चैन स्मोकर और चैन चाय पीकर के रूप में भी अखंड होते देखा।

यहां हिन्दुस्तान जिंक, आकाशवाणी और अन्य संस्थाओं द्वारा समय-समय पर जो काव्य-गोष्ठियां-सम्मेलन होते उनमें नंद चतुर्वेदी, प्रकाश आतुर, भगवतीलाल व्यास, पुरुषोत्तम छंगाणी, रामगोपाल शर्मा, देवकर्ण सिंह, कमर मेवाड़ी, मैं और मंगलजी की बैठकों के रसानंद ही कई मजे देता। मंगलजी तथा ओंकारजी दोनों बीकानेर जैसे ही यहां भी अभिन्न बनकर रहे। दोनों से सबका संपर्क लगातार तथा मेरा तो अंत तक अनन्य ही रहा।

साहित्य के विविध सरोकारों तथा जीवनधर्मी सोपानों के अलावा मेरी रुचि उनके रचनाकार के जीवन-परिवेश से जुड़े संदर्भों की भी अधिक रहती और मैं अपने मन के सवालों को भी उनसे सहभाग करता।

मैंने पाया कि ओंकारश्री का लेखन एक बलिष्ठ भुजावाला खनकदार हथौड़ा लिए था। उनके शब्दों में ललित-लावण्य का अभाव ही नहीं, जीवन-परिवेश में भी इसका अभाव ही रहा। वे अक्कड़-फक्कड़ होकर जिये और बिना तराशे ही इधर-उधर की, सबकी तलाश में रहे। वहीं मंगल सक्सेना का उदय एक सधे हुए मंचीय कवि के रूप में हुआ जो आगे जाकर नाट्य-प्रयोगी-रचनाकार के रूप में दर्शित हुआ किंतु शीघ्र ही उन्होंने अपने को एक नाट्य-प्रयोगी के रूप में स्थापित करने को मोड़ लिया। इस प्रकार उन्होंने समय को कभी बांधा नहीं सो समय उनकी मुट्ठी से बिखरता चला गया और वे समय के बंध में कैद हो जिंदगी गुजारते रहे। उनका अच्छा पक्ष यह रहा कि वे अंत तक असमय नहीं हुए।

-म.भा.

रसिया तीज रमाय

-प्रो. देवकर्ण सिंह रूपाहेली-

(1)

अलवलिया वळियो नहीं, वळियो मास असाड।
कूण लडासी लाडला, लाडी हंदा लाड।।

(2)

टहूको सावण तीज रो, पण नहं टहूका नाथ।
कुण निरखै धण राचिया, सुरंगा महंदी हाथ।।

(3)

अलबेला बेलू कुणी, धण रो बिरखा बीच।
मेह आंगण जतरौ नहीं, काजळ नैणा कीच।।

(4)

बरसाळै बालम नहीं, हिय में अधकी पीर।
बरस बरस बिरखा ठमै, नैणां ठमै न नीर।।

(5)

धोरां नाची मोरड़ी, हिरणाखी हरखाय।
मन भावन सावण हुवो, रसिया तीज रमाय।।

स्मृतियों के शिखर (14) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकचेतना की खुली बहस : जगदीशचंद्र माथुर

श्री जगदीशचन्द्र माथुर कई संदर्भों के व्यक्ति थे। साहित्यकार, नाटककार और प्रशासक के रूप में उनकी विशिष्ट सेवाएं और योगदान के अतिरिक्त उनका एक मन लोकचेतना की ललक लाली लिए चलता था और यदि कहा जाय तो यही पक्ष उनका सर्वाधिक जीवंत-जागरूक था जिसके लिए वे अंत समय तक गहरी परतों में खोये रहे। मेरा उनका पहला परिचय लेखन के माध्यम का ही रहा। जून 1962 में राजस्थान के तुर्राकलंगी ख्यालों पर मेरा एक लेख 'त्रिपथगा' में प्रकाशित हुआ था। उसी लेख के संदर्भ में उन्होंने कुछ और जानकारी तथा कुछ बातों का स्पष्टीकरण चाहा था जिसे मैंने उन्हें लिख भेजा।

रंगायन के प्रारंभिक अंकों में राजस्थान की लोककला सर्वेक्षण लेखमाला के भी कई बिंदु वे अपनी नोटबुक में उतार लाये जिन पर उन्होंने मुझसे काफी सूचनाएं लिपिबद्ध की थीं। पूछने पर उन्होंने कहा था कि 'परंपराशील नाट्य' पुस्तक के बाद में जो बहुत सारी बातें अध्ययन-अनुसंधान की विषय बनीं उन पर एक और पुस्तक लिख रहा हूं और काफी कुछ लिखा भी जा चुका है। 'ड्रामा इन रूरल इंडिया' माथुर साहब की अंग्रेजी की पहली पुस्तक थी जिसके माध्यम से कई लोग लोकनाट्य तथा लोकजीवन की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति अध्ययनार्थ आकृष्ट हुए। भारतीय लोककला मंडल को उनकी देन कई रूपों में रही।

अक्टूबर 1972 में सामरजी के अभिनंदन समारोह पर कलामंडल ने अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी का आयोजन किया तब माथुर साहब को इसकी अध्यक्षता के लिए लिखा गया। इस गोष्ठी में कई ख्यात-प्रख्यात लोककलावेत्ताओं ने भाग लिया। इसी अवसर पर माथुर साहब से मैंने पहलीबार भेंट की। भेंट ही क्या, दो दिनों तक संगोष्ठी सत्रों में तथा बाद के बचेखुचे समय में काफी कुछ बातें हुईं तब तक कलामंडल का हर प्रकाशन उनके पास पहुंचता रहा और वे देश में तथा देश के बाहर विदेश में रहते हुए भी निरंतर पत्र-संपर्क बनाये रहे।

इस संगोष्ठी के समापन पर माथुर साहब ने अपने देश-विदेश के अनुभवों के आधार पर जो महत्वपूर्ण बातें कहीं वे थीं कि लोककलाओं के पुनरुद्धार और संरक्षण से भी अधिक महत्वपूर्ण सवाल आर्थिक है। जिन कलाकारों से हम सामग्री लेते हैं, ग्रंथ लिखते हैं और अर्थ-यश अर्जित करते हैं, बदले में उन्हें क्या देते हैं? क्या किया कीर्तनिया मंडलियों के लिए? भगतों के लिए? उनका गला तब भर आया था और आंखें ओसवत् हुई जा रही थीं। उन्होंने कहा था कि विश्व-इतिहास में जितना भयानक खतरा लोकसंस्कृति पर आज है, पहले कभी नहीं रहा। उन्होंने इन कलाओं के संरक्षण, उन्नयन, विकास के लिए सुझाव दिया था- हर ब्लॉक में एक-एक मंच का, पाठ्यक्रम में इनके स्थान का, मेलों-ठेलों में क्षेत्रीय महोत्सवों के आयोजन का, कला जातियों के बच्चों में छात्रवृत्तियों का।

सन् 78 में जब वे उदयपुर में आयोजित एक प्रौढ़शिक्षा सम्मेलन में आये थे तो लगभग दो घंटे तक बैठकर तुर्राकलंगी ख्यालों और राजस्थानी के अन्य ख्याल-विधाओं के संबंध में बहुत सारे सवालों का जवाब बटोरते रहे। कलामंडल के शोध कक्ष में तब सामरजी, मैं और माथुर साहब तीनों ने सारे देश के, लोकनाट्यों की खुली बहस छोड़-छेड़ दी। यह बैठक मेरे जीवन की ही नहीं बल्कि कलामंडल के पच्चीस वर्षीय जीवन की भी सर्वाधिक शोध-संगोष्ठी बैठक थी जब हम तीनों केवल परंपराशील नाट्य के अंतरगठन, एकरूपता, उनके बैठकीय उठकीय स्वभाव स्वरूप और नाना शिल्प कला तंत्र की बहस-बाजी का सुख-रस ग्रहण करते रहे।

सन् 1945 में बिहार के एक देहाती इलाके में वैशाली के ध्वंशावशेषों की छाया में एक सांस्कृतिक महोत्सव आयोजित कर जैसे माथुर साहब ने अपने एक स्वप्न-बिंदु को अंतरिक्ष से उतारा था तब उन्हें लगा था कि मरुभूमि के अन्तस्तल में प्रवाहित होने वाली शत-शत धाराओं को उन्होंने अपने स्पर्शमात्र से ही उगमा दिया हो। वैशाली का यह महोत्सव तब से एक नैरन्तर्य को नव्य-भव्य रूप में रूपायिक करता आ रहा है।

लोकनाट्यों की शैली में उन्होंने कई नाट्य रचनाएं कीं। आज जो नाट्यप्रयोगी नाना प्रयोग कर रहे हैं, माथुर साहब बहुत पहले ही ये प्रयोग बड़ी सफलतापूर्वक कर चुके थे। इस दृष्टि से वे पहले प्रयोगकर्त्ता कहे जा सकते हैं जब अज्ञात रहकर ख्यात कृतियों को ख्याति के शीर्ष बिंदु पर पहुंचाया था। 'कुंवरसिंह की टेक' नामक कठपुतली रचना के लिए स्वयं माथुर साहब ने लिखा- 'लोकनाट्यशैली में रची गई पहली आधुनिक रचना थी जिसकी रचना राजस्थानी कठपुतली कलाकार सागर भाट और उसकी पत्नी के लिए की। दोनों निरक्षर, दोनों गरीब, दोनों कलह प्रिय। लेकिन क्या जादू था सागर भाट की अंगुलियों में ! क्या उल्लास था उसकी पत्नी बसंती के कंठ में! चवन्नी में तमाशा दिखाने वाले सागर भाट ने कुंवरसिंह की टेक द्वारा अपना आसन बिहार, उत्तरप्रदेश और राजस्थान के गांवों और घरों में ऐसा जमाया कि उसे शाम को अपनी मनभावन शराब के लिए पैसा मिला और बसंती को नए लंहगे, चुनरी और चोली और माथुर साहब को वह नियामत मिली जो हिंदी के किसी नाटककार को नसीब नहीं हुई। किसी को मालूम नहीं कि इसके शब्द और गीत किस लेखनी की उपज हैं। इस देश में युगों-युगों से अज्ञातनामा कवि और कलाकार ही जनमानस का स्नेहपात्र बनता रहा है। यह अज्ञातनामा स्थिति उस ख्यातनामा स्थिति से कितनी भिन्न है जो अनामिका जैसी संस्था अपने नाम के बावजूद अपने अलंकृत नाट्यकारों को प्रदान करती है।'

माथुर साहब की लिखी 'गगन सवारी' नाटिका के पीछे का रहस्य भी यही है बल्कि इसके पीछे तो एक किवदंती सी खड़ी हो गई कि आकाशवाणी के महानिदेशक माथुरजी के आदेश गगन सवारी (ब्राडकास्टिंग हाउस की सबसे ऊंची अटारी) में बैठकर लिखे जाते हैं।

भारत के किसी अंचल का कोई लोकनाट्य ऐसा नहीं जो उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखा हो और कलम से नहीं लिखा हो। विदेश में भी जहां वे गये, रहे, उन्होंने उधर की ग्राम्यजीवी नाट्य परंपराओं का अध्ययन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कलामंडल ने अपने 25 वर्ष पूर्ण होने पर लोककला संगोष्ठी का आयोजन किया तो माथुर साहब को अध्यक्षता करने को लिखा गया। उन्होंने पूरे ही दिनों यहां आकर कलाकारों तथा इधर के रंगमंच का अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की और उनकी यह इच्छा उनकी मनोकामना के अनुसार पूरी हुई भी।

इसी अवसर पर 'रजन्तिका' नाम से एक स्मारिका कलामंडल को प्रकाशित करनी थी तब मैंने माथुर साहब से एक लेख भिजवाने को लिखा था। काफी दिनों बाद 14 फरवरी को उन्होंने अपना लेख मुझे भेजा और लिखा- 'बहुत विलंब से आपके रजत जयंती ग्रंथ के लिए लेख भेज रहा हूं। जानता हूं कि फर्मे छप चुके होंगे और अब शायद इसे शामिल करने की गुंजाइश न हो फिर भी मन के संतोष के लिए 'ऋणमुक्त' होना चाहता हूं। आपके अनुरोध का पालन पहले भी नहीं कर पाया था इसलिए भी।'

कितना सरल स्वभाव और स्नेह भाव था उनका! उन्होंने सर्वथा अधूरे विषय पश्चिमी जर्मनी के बबेरिया प्रांत के ओबरएम्मरगाड गांव, इटली के मेपल्स नगर के अमाल्फी क्षेत्र के गांव तथा कनाडा के ओंटेरिया प्रांत के टोरंटो नगर से लगे स्टेटफर्ड गांव में प्रचलित लोकनाट्योत्सवों पर एक अच्छा सा शोधपूर्ण लेख भेजा जिसे स्मारिका में प्रकाशित भी किया गया मगर स्मारिका निकलने के पूर्व ही वे हम सबके बीच से विदा हो गये, सदैव के लिए। उनका चले जाना लोकचेतना के राजर्षि से हाथ धोना ही कहा जायेगा।

ज्ञान की खोज में आजीवन उनका मन एक जिज्ञासु बनकर रहा। कभी भी उन्होंने अपने ज्ञान की गरिमा किसी को नहीं जताई। वे जहां भी गये खुली बहस में सहज हो जाते। अपने तर्क रखते और सदैव उन पर कुछ सुनने जानने के लिए तैयार रहते। राजस्थान से इतने दूर होते हुए भी इधर के ख्यालों की जितनी गहरी पैनी जानकारी उनको थी उस रूप में हमने भी कभी नहीं सोचा। अलवर के 'सांगीत' की चर्चा में तो उन्होंने जो बारीकियां निकाली कि दंग रह जाना पड़ा। उनकी याददाश्ती बड़ी तगड़ी थी। वे अपने हर क्षण का सदुपयोग चाहते इसलिए जहां भी जाते, पहले से ही अपने कार्यक्रम की पूरी विवरणिका भेज देते।

मैंने जब उन्हें अपनी संज्या, थापा तथा मेंहदी पुस्तकें भेजीं तो मिलने पर उन्होंने बहुत सारी चीजें ऐसी बताई जो उनके स्वयं के परिवार में प्रचलित हैं। कलामंडल के इन प्रकाशनों के पीछे उनकी प्रेरणाएं रही हैं और मार्गदर्शन भी कि कौनसा विषय ऐसा है जिस पर अधिक पकड़ और पंडिताईपूर्ण ढंग से शीघ्र कोई चीज पाठक-जग को देनी है।

माथुर सा. ने समय-समय पर मुझे पत्र लिखे हैं। खासकर जब उन्हें रंगायन का अंक मिलता या कलामंडल से कोई नई पुस्तक उन्हें प्राप्त होती तब वे पत्र ही नहीं, अपनी स्पष्ट राय और उससे संबंधित अवान्तर सूचनाएं अवश्य देते। यहां उनके दो पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

'कोणारिका'
सी 1 / 26 वसंत विहार,
नई दिल्ली-110057
दिनांक : 23.5.1977

प्रिय डॉ. भानावतजी

'थापा' और 'सांझी' पर पुस्तकें लोकसंस्कृति में पढ़ेलिखे नागरिकों की रुचि जगायेगी और इन विषयों में भ्रांतियों को दूर करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मुझे तो कई नये तथ्यों की जानकारी हुई। राजस्थान और ब्रज के थापाओं का प्रभाव एक नागरिक विधा पर भी पड़ा। उत्तरप्रदेश के नगरों में रहने वाले कुछ परिवारों में अहाई आठे और दीवाली और उससे पहले सलूनों पर जो चित्र बनाये जाते थे उनकी कला का स्त्रोत वे थापे ही जान पड़ते हैं जिन पर आपने खोज की है। मेरी पत्नी अब भी वे चित्र बनाती हैं किंतु प्राय: आधुनिकाओं ने इन सुंदर प्रथाओं को तिलांजलि दे दी है।

मेरी धारणा है कि लोक रीतियों, उत्सवों और कलाओं की महत्ता ग्रामीण समाज की सामूहिक अभिव्यक्ति एवं तज्जनित आत्मविश्वास के लिए तो है ही, समग्र समाज के स्थिरीकरण के लिए भी है क्योंकि इनके द्वारा नागरिक समाज का नाता लोकजीवन से जुड़ा रह सकता है। खेद यही है कि हस्तशिल्प की विदेशों में मांग के कारण नगर ने ग्राम से व्यावसायिक नाता तो पक्का करना शुरू कर दिया है लेकिन वह नाता जो नागरिक समाज की उखड़ी जड़ों को पुन: स्थापित कर सके, भिन्न हो चला है। पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्थाएं इतनी बदल गई हैं कि परिस्थिति सुधरने के कोई आसार नहीं दिखते। हां यदि हमारे विद्यालयों के कार्यक्रमों में लोकोत्सवों को शामिल किया जाय (अध्ययन के लिए नहीं वरन व्यावहारिक रूप में जैसे खेलकूद होते हैं) तो संभव है कि नई पीढ़ी सांस्कृतिक जीवन का लोकसंग्रही वातावरण पुन: स्थापित कर सके।

सामरजी ने और उनके निर्देशन और सहायता से आपने, अपनी ओर से कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। शायद भविष्य में कभी न कभी ये पुस्तकें स्कूलों के अध्यापकों के लिए आवश्यक हों जैसे क्रिकेट, हॉकी, योग, कसरत इत्यादि के लिए स्कूलों में सामग्री उपलब्ध की जाती है। सामरजी उन विरले स्वप्नदृष्टाओं में हैं जो अपने स्वप्नों को काफी मात्रा में साकार कर सके।

आपका
जगदीशचंद्र माथुर

- शेष पृष्ठ सात पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

एचडीएफसी बैंक के परिणाम घोषित

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. के निदेशक मंडल ने बैंक के 30 जून 2016 को समाप्त तिमाही के नतीजों के लिए अंकेक्षित नतीजों को मंजूरी दे दी है। बोर्ड ने यह मंजूरी आज मुंबई में आयोजित बैठक में दी। बैंक की 30 जून 2016 को समाप्त तिमाही में कुल आय 19,322.6 करोड़ रुपये रही, जो 30 जून 2015 को समाप्त तिमाही में 16,503.0 करोड़ रुपये रही थी। इसकी शुद्ध आमदनी (शुद्ध ब्याज आय और अन्य आय का योग) पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 8,850.7 करोड़ रुपये से 19.6 प्रतिशत बढ़कर 30 जून 2016 को समाप्त तिमाही में 10,588.1 करोड़ रुपये रही।

शुद्ध ब्याज आय या एनआईआई (ब्याज प्राप्ति में ब्याज खर्च घटा कर) पिछले साल की समान तिमाही के 6,388.8 करोड़ रुपये की तुलना में 30 जून 2016 की तिमाही में 21.8 प्रतिशत बढ़कर 7,781.4 करोड़ रुपये हो गयी। इसमें बीती तिमाही के दौरान 20.2 प्रतिशत की औसत संपदा वृद्धि (एसेट ग्रोथ) और 4.4 प्रतिशत शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) का योगदान रहा। 30 जून 2016 को समाप्त तिमाही में अन्य आय (गैर-ब्याज आय) 2,806.6 करोड़ रुपये रही, जो शुद्ध आय का 26.5 प्रतिशत है। इसमें पिछले कारोबारी साल की समान तिमाही के 2,461.09 करोड़ रुपये की तुलना में 14.0 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई।

शरीर सज्जा के आभूषण

शारीरिक सौंदर्य की अभिवृद्धि के लिए सर्वाधिक चर्चा आभूषणों की मिलती है। सच भी है, व्यक्ति अच्छा दिखे, अच्छा लगे तो उसका प्रभाव भी अच्छा पड़ता है। इसीलिए प्रथम दृष्टया व्यक्तित्व पर अधिक जोर देने को कहा गया है।

ज्ञान-सम्पन्न लोगों ने कुछ दूसरी बातें कही हैं। अध्यात्म के क्षेत्र के लोग कुछ अलग कहेंगे पर मोटे रूप में यही सत्य है कि व्यक्ति अपने अच्छे ओढ़न पहनने तथा मुख्यत: आभूषणों द्वारा अपने शरीर को अधिक से अधिक सज्जित करे तो ही उसकी प्रशंसा तथा सामाजिक स्तर का बखान होता है।

यह प्रवृत्ति महिलाओं में अधिक है इसीलिए पुरूष से अधिक, कहीं अधिक महिलाएं अपने तन को सजाती हैं। उनके ऐसे सजने-सजाने के कई साधन हैं पर सर्वाधिक मुख्य तो आभूषण ही हैं। यहां राजस्थान में विविध अंचलों में जो विविधनामी धातु-आभूषण प्रचलित रहे हैं उनकी नामावली प्रस्तुत है।

आज के संदर्भ में ये आभूषण अजीब ही लगते हैं। अब वह परंपरा, रिवाज और आवश्यकता भी नहीं रही पर पता तो चले कि हमारा प्रदेश कितना समृद्ध, आलीशान तथा महिला-सज्जा का मुख्य प्रदेश रहा।

सिर- काचरियो, खेंचा, चन्दरमा, चोटी, झबरक झूटणा, झूटणा, झेला, टीको, टीडीभलको, तागो, नाळी, पटियो, पतरी, पात, पान, फतेचांद, फतेपेच, फीणीसरी, बोरलो, भलको, मांगटीको, मैमद, मोरमींडी, रखड़ी, राकेड़ी, सांकली, सिणगारपट्टी, सिल्लक, सिवतलक, सीसफूल, सुवा भलको, सेवरा।

नाक- कांटो, केवड़ावाली चूंप, कोको, खिलीपाछी री चूंप, टांट्या वाली नथ, दांत चूंप, नथ, फीणी, फूलवाली नथ, बच्छावाली चूंप, बाली, बीजलीवाली नथ, बुलाक, भमरक्यो, भलको, भोगली, मासा, मेख, मोत्यांवाली नथ, मोरड़ीवाली नथ, लूंग, सरी।

कान- उपरकीन्यो, ऊंकार्‌यो, ओगन्या, कनफूल, कनौली, कुंडल, कोकरू, गुड़दा, चोपड़ा, छैलकड़ी, झूमका, झूमरिया, झेले, तूंगल, टोकरी, टोटी, टोपस, टोस, पानड़्यां, पासा, पीपलपान, बाला, बाली, बिरबली, बूजली, मछली, मजीपत्ती माकड़ी, मामामुरकी, मूंदड़ा, मोती, मोतीचौकड़ा, मुरकी, लूंग, सांकली, सुरलिया, सुरगवाली, हरवणिया।

गला- आड, आडो कांठलो, कमरख, कालर, कंठलो, कंठी, कंठो, खुंगाली, गलपटियो, गलसरी, गलसांकली, गोप, गोल मादल्यो, घूघरीवाला पट्या, चपटा मादल्या, चिंक, चैन, चंदरगला रो हार, जंजीरा, जंतर्‌यो, झालरो, टेवटो, ठूसी, डोरा, ढोलना, तखती, तमण्यो, तागली, तायत, ताराकंठी, तिमनो तेवटो, तिलड़ी, तुलसी, तेड़्यो, दोयरो, धुगधुगी, पट्या, फूलपतड़ी, बदी, बजंटी, बंटन, मटरमाला, मादलियो, मोत्यांवाली कंठी, मोहनमाला, मंगलसूत्र, रामनामी, लड़मूरत, वाड़ली, वाड़लो, सटको, सतलड़ो, सीवासांकली, सांकल्यो, हमेल, हार, हालरो, हाली, हांकरी, हांसली।

हाथ- अणत, आटसी, अंगूठड़ा, अंगूठी, उंतेणा, करता, करवर्‌यां, कांकण, कातर्‌या, काचली री चूड़्यां, खंजरी, खरदांवणा, खांच, गजरा, गचमा टीका, गूजरी, गेंद, गोरखधंधो, घूघरीवाली चूड़ी, चमचूड़्यां, चम्मक चूड़ी, चूड़, चूड़्यां, चूड़ी, चौथ, चंदरबाई रो चूड़ो, छलकड़ा, छल्ला, छाप, जवा, जवल्या, टड्डा, टीपां, डंकचूड़्यां, दामणा, दांतरी चूड़्यां, नारमुखी कड़ा, नोगर्‌यां, पट्ठा, पछेली, पाटल्यां, पाटला, पात, पाठावाली वींटी, पूंचां, फूंदी, बाजू, बाजूजोसण, बाजूबंद, बां मादल्यो, बिलिया, वींटी, बेल, बोर्‌यो, बोरावाली चूड़ी, बंगड़्यां, बंगड़ी, बंद, भुजबंद, मूठ्या, मूंदड़ी, रायफल, लंगर, बोरावाली टीपां, लाख री चूड़्यां, सूतड़ा, हथपान, हथफूल, हथ सांकलो।

कमर- कणकती, कंदोरो, कंसलै री तागड़ी, कांकड़ा, केर्‌यांवालो कंदोरो, चटको, झालरीवालो कंदोरो, झालरवाली तागड़ी, डमरूवाली तागड़ी, तागड़ी, तालियो, दालवाली तागड़ी, पान वाली तागड़ी, बतकांवाली तागड़ी, बिसकुटवाली तागड़ी, मकोड़ा वालो कंदोरो, मकोड़ावाली तागड़ी, मादल्या, मादल्यावाली तागड़ी, लड़वालो कंदोरो, सीड़ी पिन।

पांव- अणवट, आमरा, आइरां, अंगूठड़ा, कड़ा, कड़ियां, कडुल्या, काम्बीयां, कांसी रा तोड़ा, खींतावाली, गोर्‌या, घूघरा, घूघरा री छड़, चट्या, चींटूड़ी, छड़ा, छल्लाटूम, टणका, तांती, तोड़ा, नरवलिया, नेवर्‌यां, पाइरां, पाजब, पाठवाला कड़ा, पायलां, पिंजण्यां, पैंजण्यां, पोला, पोली, फोलर्‌यां, बच्चा, बिछिया, बोरांवाला तोड़ा, माछर्‌यां, मूंडावाली नेवर्‌यां, रमझोल, लच्छ्या, लंगर, सूतड़ा। **-म.भा.**

सुभेन्द्र मैती का बहुरूपिया अध्ययन

बंगाल के सुभेन्द्र मैती ने बहुरूपिया स्वांग के बारे में विशेष अध्ययन करने बाबत् नाट्यप्रयोगी विलास जानवे के साथ 23 जुलाई को डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्ष से एक सीनियर फैलोशिप के अंतर्गत इस अध्ययन के लिए त्रिपुरा, झारखंड और आसाम की यात्रा कर चुके हैं। अब वे राजस्थान और फिर उड़ीसा का दौरा करेंगे।

सुभेन्द्रजी के बहुत सारे सवालों के जवाब में डॉ. भानावत ने बताया कि बहुरूपिया विद्वानों द्वारा दिया गया सुविधावाची शब्द है। विभिन्न प्रांतों में इसके जुदा-जुदा नाम हैं और उन नामों के अनुसार ही इस कला से स्थानीय जनपदी संस्कृति, संस्कार और जीवनधर्मिता जुड़ी हुई है। लोक की किसी विधा का अध्ययन किया जाय, हम हमारे विचार, हमारी शब्दावली और अपनी निजी समझ को उनके अनुसार वर्णित न करें। ऐसा करने से इस तरह के अध्ययन में कई विसंगतियां भी आई हैं।

राजस्थान में बहुरूपिया भांड नाम से जाना जाता है। भांड वह जो भांडाई कर अपना गुजरबसर करता है। वह जहां-कहीं जाता है, स्थिरवास कर पन्द्रह-बीस दिन तक नये-नये स्वांग दिखाकर खासा मनोरंजन करता है। जिस व्यक्ति का स्वांग धारण करता है, हूबहू वैसा ही लगता है। एक ही व्यक्ति बहुरूप धारण करने की जबर्दस्त सामर्थ्य और शक्ति लिए होता है। राजस्थान में ऐसे कई उदाहरण हैं जब भांडों ने राजा-महाराजाओं तक को भ्रमित कर अपनी अनूठी कला से ढेर सारी बगसीसें प्राप्त की हैं। इस संबंधी डॉ. भानावत ने सुभेन्द्रजी को अपने द्वारा प्रकाशित जानकारी से भी समृद्ध किया।

ग्राम्य शिल्पी गांछा

-भेरूसिंह राव क्रांति-

कानोड़ नगर में 10 गांछा परिवार बांस कुटीर उद्योग में लगे हुए हैं। छह परिवार गांछों की घाटी व चार परिवार बाहरला शहर में हैं। 75 वर्षीय वरदीचंद ने बताया कि हमारे दादाजी श्री नाथूजी

150 वर्ष पूर्व प्रतापगढ़ से यहां कानोड़ आए। मेरा बड़ा भाई धूलचंद, छोटा भाई भेरूलाल, मेरा व मेरे भतीजे शांतिलाल का परिवार इस कुटीर उद्योग में लगा हुआ है। बांस का यह कुटीर उद्योग हमारा पैतृक व्यवसाय है जो हमारे बड़ाउवों से चल रहा है। परिवार की महिलाएं भी इस कार्य में कुशल हैं तथा बराबर सहयोग करती हैं। बांस से निर्मित किये जा रहे उपकरण :

टोपला, टोपली, पालणा, छाब, चक (कमरों के), कंडिया (पूर्वजों का), वालनियां (देवता को झुलाने का), करवेला (पौध संरक्षण वाला), कोइड़ी (कुए सं मिट्टी निकालने की), जोयला (चपातियां रखने का), झाड़ू, बिजणा (पंखा), झोंपड़ियां, सूपड़ा, आरती आदि।

विवाह संबंधी उपकरण :

आरती- दूल्हे के तोरण वांदने के पश्चात दुल्हन पक्ष की सास, बुआ सास आदि द्वारा दूल्हे की आरती उतार स्वागत किया जाता है तथा विदाई के समय दुल्हन के साथ भेजी जाती है।

टोपली- बेटी की विदाई के समय बांस की टोपली देना शुभ वर्द्धक माना जाता है। इसमें मठड़ी, खाजे, पापड़ आदि भर ऊपर लाल कपड़ा लच्छे से बांधकर ससुराल भेजा जाता है।

सूपड़ा- शादी-ब्याह के समय अब गांवों, खेड़ो, ढाणियों वालों के लिए सूपड़ा बनाते हैं। विवाह में तेलवान उतारते समय व दोवड़ा बांधने के वक्त 'हाळ सूपड़ा' रस्म की जाती है। इस रस्म में घर की दो बहुएं तथा दो बेटियां सूपड़े व मूसल की पूजा करती हैं। कुंमकुंम का तिलक कर लच्छा बांधते हुए सूपड़े में पांच तरह का धान (अनाज) लेकर एक-दूसरी को एक सूपड़े से दूसरे सूपड़े में धीरे से पांच अथवा सात बार आदान-प्रदान करती हैं। इसमें सावधानी यह बरती जाती है कि एक सूप से दूसरे सूप में अनाज देते-लेते समय बजने की आवाज न हो। फिर इस पंच धान को पांच या सात मिट्टी के दीवालियों में रखकर माया वाले कमरे में माया के आगे रखते हैं।

चार युवा अभी नौकरी में हैं। एक अध्यापक व तीन च.श्रे. कर्मचारी। ये बालिका शिक्षा पर भी ध्यान दिये हुए हैं। विद्या गांछा कानोड़ कॉलेज से बी.एड. कर रही है तथा शारदा गांछा 11वीं कक्षा (कला) में राज. उग्रसेन कुमारी बालिका उ.मा.वि. में अध्ययनरत है। बांस का बना सामान पहले अजमेर, माण्डल, फतहनगर तक जाता था। वर्तमान में भीण्डर, डूंगला, मंगलवाड़ आदि में भी जाता है। सूप की महिमा दर्शाता कबीर का यह दूहा-

'साधु ऐसा चाहिये,
जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे,
थोथा देय उड़ाय।।'

डीएचएफएल का शुद्ध लाभ 16.23 प्रतिशत बढ़ा

उदयपुर। भारत की अग्रणी निजी क्षेत्र की हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों में से एक डीएचएफएल ने 30 जून 2016 को समाप्त अपनी प्रथम तिमाही के परिणामों की घोषणा की जिसमें कंपनी का शुद्ध लाभ 16.23 प्रतिशत बढ़कर 201.4 करोड़ रूपये हो गया। असेट अंडर मैनेजमेंट तिमाही दर तिमाही 20.02 प्रतिशत बढ़कर गतवर्ष जून 2015 को समाप्त तिमाही के मुकाबले 60,001.6 करोड़ से बढ़कर 72,012.1 करोड़ पहुंच गया।

डीएचएफएल के चेयरमैन तथा प्रबंध निदेशक कपिल वधावन ने कहा कि हमने एक विविधतापूर्ण वित्तीय सेवा समूह के तौर पर आने के लिए पूर्व में जो प्रयास किये थे, वे अब पे ऑफ हो रहे हैं और अब हम 2017 के लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग पर है।

उन्होंने कहा कि सरकार के हाउसिंग फॉर ऑल तथा स्मार्ट सिटी के प्रयास की महत्वता के साथ वहनीय हाउसिंग सेगमेंट तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम में मूल्यवर्धन होने से कंपनी की टॉप लाइन ने बढ़त में योगदान दिया है। भारत सरकार द्वारा प्रेरित नयी पॉलिसी में आने वाले तिमाही में हाउसिंग फायनेंस की बढ़त की लय है और डीएचएफएल में हम होम फायनेंस विकल्पों को प्रदान करने और अपने मूल्यवान ग्राहकों को प्रतिस्पर्धी दरों पर विश्व स्तरीय सेवा देने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं।

कपिल वधावन ने कहा कि 30 जून 2016 को समाप्त तिमाही में शुद्ध लाभ गतवर्ष की समान तिमाही के 173.3 करोड़ की तुलना में 16.23 प्रतिशत की बढ़त के साथ 201.4 करोड़ हो गया। इस समाप्त तिमाही में कर पूर्व लाभ गत वर्ष की समान तिमाही के 261.4 करोड़ की तुलना में 15.88 प्रतिशत की बढ़त के साथ 302.9 करोड़, लोन बुक आउटस्टैंडिंग गत वर्ष की समान तिमाही के 53795.7 करोड़ की तुलना में 18.32 प्रतिशत की बढ़त के साथ 63,646.6 करोड़, लोन डिसबर्समेंट तथा सेंक्शन क्रमश: 6,214.8 तथा 8,800.7 करोड़ रहे जो कि गत वर्ष की समान अवधि में से क्रमश: 25.54 प्रतिशत तथा 12.00 प्रतिशत अधिक हैं।

30 जून 2016 को समाप्त तिमाही में कुल आय गत वर्ष की समान तिमाही की 1,652.2 करोड़ की तुलना में 18.52 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,958.3 करोड़ रूपये, ग्रोस एनपीए 0.98 प्रतिशत के साथ 623.8 करोड़ रूपये तथा शुद्ध ब्याज मार्जिन 2.91 प्रतिशत रहा।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 अगस्त 2016

चौमासा के जीव

बारहों महिनों में चार मास 'चौमासा' की रंगत न्यारी है। इन महिनों में धरती प्रसविनी होती है। सब ओर हरियाली, जल, प्राकृतिक छटा और खुशहाली। तीनों लोकों में बहार। हजारों तरह की वनस्पति और हजारों तरह के जीव-जन्तु इसी मौसम में पैदा होते हैं। हम सबको पहचान भी नहीं पाते और देख भी नहीं सकते। जनपदीय स्थितियों के अनुसार उनके जो लोकनेत्री अध्ययन हुए हैं वे ही बड़े मजेदार, अनूठे और अक्ल को दाद देने वाले हैं। फिर समै के बदलाव के साथ प्रकृति में भी बदलाव देखने को मिलता है।

अब बादलों की गड़गड़ाहट पूरे आकाश को फटा देने वाली नहीं होती। बीजली की चमक भी चाबुक सी मार नहीं देती और विविध रंगी दृश्यों की छटा दिखाई नहीं देती। इन्द्रधनुष की तनक तो दूर भनक भी नहीं लगती। बड़े कविवरों ने जो वर्णन किये, उनके रहते, जीवते ही वे वर्णन धूमिल पड़ने लगे। यही हाल जीवों का, लता-बेलड़ियों, फल-फूलों का हुआ।

चालीस साल पुरानी प्रकृति ही नहीं दिखाई देती। मखमली ललाई वाली सुकोमलांगी सावण की डोकरी, रामजी का उड़न छू घोड़ा, कुंडली में कैद फनकारी स्यां स्यूं, हरवर-हरवर करता लालस्यूं गरगलों का रेला, उछाल मारती तरंगी और टमटमाती चमकदार मटोकती आंखों वाली छोटी-मोटी मेंढ़कियां, जुगनुओं का लपकझपक देता प्रकाश-टर्च। तिल सी छोटी और नागमणि सी अनेकरंगी पांखों वाली सुकोमल तितलियां अब नजरों से गायब हैं। वह गंध भी नहीं जो अनायास ही नाक में भर-भर जाती थी। उन सबका यथार्थ दर्शन अब दूर दर्शन भी नहीं रहा, कम्बख्त स्वप्नदर्शी भी नहीं।

पत्र-पिटारी

मेहरबानी का लेखन अधिक समय तक धार नहीं देता

डॉ. महेन्द्र भानावत के पास कई ठिकानों से कई विद्वानों के उलूलजुलूल पत्र आते रहते हैं। उन पत्रों में उनकी विविध भांति भड़ांस ही अधिक देखने को मिलती है। ऐसा ही एक पत्र रमेशचंद्र तोमर, दवाना जिला खरगौन मध्यप्रदेश ने 13 जून 2000 को लिखा-

''चौमासा अंक में आपका आलेख राजस्थान के लोकनाट्य पढ़ा, काफी रोचक और गुदगुदाने वाला। किसी पेपर में आपने मेरी गणगौर पुस्तक की समीक्षा लिखी थी। यदि उसकी कटिंग हो तो भेजने की कृपा करें। अब आपकी धारदार कलम क्या करने जा रही है? शुक्लजी आप पर मेहरबान हैं तो लिखते रहिये। मेरे तो आलेख नहीं छापे।''

डॉ. भानावत को तोमरजी का यह लिखना ठीक नहीं लगा। जवाब में उन्होंने 23 जुलाई को जो पत्र लिखा उसे यहां दिया जा रहा है-

श्रीयुत् तोमरजी,

आपका 13.7 का कार्ड मिला। चौमासा वाला लेख लिखवाया गया था। आपका यह लिखना हास्यास्पद लग रहा है कि मैं किसी की महरबानी से छपता हूं। शुक्लजी तो क्या, वहां मेरा कोई मित्र नहीं है। मैंने 550 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में लिखा। करीब 7-8 हजार आलेख छपे हैं। क्या ये सब किसी की महरबानी के परिणाम हैं? साहित्यकार-कलाकार तो यों भी कृपाकांक्षी किसी संदर्भ में नहीं होते हैं। उन्हें होना भी नहीं चाहिये। मैंने 30 से अधिक वर्षों तक रंगायन निकाला। शोध पत्रिका और अन्य पत्र भी संपादित किये। उनमें मुझे नहीं लगता कि मैंने किसी को छापकर कोई महरबानी की।

क्या लेखक स्वयं कुछ नहीं होता? जब आप मेरे लेख की प्रशंसा कर रहे हैं तो फिर ऐसा क्यों लिख रहे हैं? मेहरबानी का लेखन अधिक समय तक धार नहीं देता है। राजस्थान के लोकनाट्यों पर पिछले 40 वर्षों से निरंतर मैं ही कार्य कर रहा हूं। इस लेख के छपने के बाद भी मैंने और नई जानकारियां एकत्र की हैं और एक पुस्तक ही छपने की योजना बनाई जा रही है। आशा है, आप अन्यथा नहीं लेंगे। छपने-छपाने के लिए पूरा देश और विदेश पड़ा है।

किसी की महरबानी के मोहताज बनने से विकास ही रूक जाता है और घेरे में बंधना पड़ता है। दम तो लेखक में ही होना चाहिये ताकि वैरी भी लोहा मानकर हतप्रभ होता रहे। आशा है, स्वस्थ, मस्त हैं।

आपका

डॉ. महेन्द्र भानावत

मातृभूमि की गंध लिये

शब्द रंजन में मातृभूमि की सुगंध है। 'स्मृतियों के शिखर' के जरिये आप अनेक नई-पुरानी दुर्लभ जानकारियां दे रहे हैं। आपकी कलम से लिखा हर लेख-संस्मरण शब्द-शब्द पढ़ता हूं। आप साधारण कागज पर असाधारण सामग्री दे रहे हैं। शब्द रंजन देखकर डॉ. नेमीचंदजी (इन्दौर) के द्वारा संपादित मासिक तीर्थंकर और शाकाहार क्रांति का ख्याल आता है।

डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

श्री रतन शाह होणे रौ प्रयोजन

-ओंकारश्री-

आज 21वीं सदी री चौखट माथै ऊभा राजस्थान रा हेता कुवां नै संकळप पड़सी कै आपां आपणी मातृभाषा नै संविधान री 8वीं अनुसूची में सामळ करवायर ईज दम लेवालां। नीं तो आणे वाळी पीढ़ियां रौ आपां माथै करजो रैय जावेलो। जे अबैईज नी जाग्या तो करजो उतारणो ओखो हुय जावेलो। सदियां पैली राजस्थान री धरती माथै बैवणवाळी सरस्वती नदी रौ पाणी सूख गयो हो। जे आपांरी नींद ओजूं ही नी खुली तो इतिहास में मांड लियो जावेला कै 21वीं सदी में पूगतां-पूगतां राजस्थान री धरती रौ पाणी ई नी भाषा अर साहित्य रो पाणी भी सूखग्यो है।

अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह कलकत्ता, 8-9 जनवरी 2005 रै मोकै छप्ये थके श्री रतन शाह रै संदर्भित आलेख नै मैं समै रै शिलालेख पर मंडतो थको चेतावणी रौ अभिलेख मानूं। उक्त कथन रा सुर, राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति रै वजूद अर इण री तीखी तासीर रौ झकझोर निरफळ नी लावा वाळी। आ वाणी है आंसू, आग, खून अर पसीने री।

समै साख भरै

जिकै भी राजस्थान-वासी-प्रवासी में स्वाभिमान रा भाव जीवन्त है वै लोग कोरी चिन्ता में नी डूब्या थका है। एक गहरे रचनात्मक चिंतन सूं जुड़योड़ा अबै इयै नहेचे नै अंगेज र्या है। राजस्थानी भाषा री अस्मिता अर जुगाड़ू चेतना रक्षा साठ एक सजोरो जनाधार खड़े करणो ही एकमात्र बचाव रौ उपाय है।

समै किणी री प्रतीक्षा नी करै। ओ सूत्र झाल्यो रतन शाह लगै टगै आज सूं आधी सदी पैला। हकीकत है प्रशस्ति मात्र नहीं, समय री साख है कै इण सगस हाथ पर हाथ नी धर, 10 करोड़ लोगां री दूध, पूत, सपना अर संघर्ष री आखै संसार में आवाज उठाई एक अदद अकेले जनयोद्धा रतन शाह रै छैड़तो थके इण री संवैधानिक मान्यता रै अभियान पूठै। चौतरफे सांस्कृतिक सन्नाटे नै चीरतां थकां इणा चरैवेति मंत्र साधते थके समूचे राजस्थान समेत काश्मीर सूं कन्याकुमारी तांई राजस्थान रा प्रवासियां बिचै राजस्थानी भाषा सारू लम्बी लड़ाई री सशक्त लोकतंत्री जनाधारी ताकत रै उभार साल लेखनी उठाई, रचनावतां री जमात नै झिंझोड़ी।

जिण तरै कर्मवीर गांधी, देसरी आजादी सारू अहिंसात्मक सत्याग्रह रौ आगाज कर्यो -एकल राष्ट्रीय अभियान पाण। उणी तरै रतन शाह राजस्थानी लोकचेतना रौ संकळप लियां साव अकेला जनता रै बीच मैदान में ऊतर्या। किणी पूंजीदार घराणे रौ सायरो नीलियो।

रचनात्मक क्रांति री धमक

लिजलिजी भावुकता, वक्तव्यबाजी, कोरे प्रस्तावां री लीकां मांडतां, पद, मान, पदवी, पुरस्कार अर एक संघर्षरत भाषा नै हेतुवादी स्वार्थां री नामवरी सारू भुणावण वाळा कथित जेबी संस्थाधारी लोगां पाण किणी लोकवाणी रौ न्यायिक संघर्ष नी जीत्यो जा सके।

रतन शाह, राजस्थानी जगत में पैलपोत नींव डाली 'राजस्थानी प्रचारिणी सभा' सरूपी संगठन री आज सूं छठे दशक रै उत्तराद्धं में। इण सभा रै बैनर तळै, इणा शनै-शनै भेळा करला वां लोगां नै जिका जनपथ माथै जागरण री मशाल थामण री बलिदानी जूझ राखै। इणा रौ ध्यान सतेज हुयो जद कोंकणी अर मणिपुरी री मान्यता (संविधानी) जद चाल र्यी ही। बीं टैम 'सभा' री ओर सूं 'राजस्थानी भाषा, मान्यता समिति' संगठन कियो गयो। हजारां री संख्या में पोस्टकार्डां पर दस्तखत करार राष्ट्रपतिजी ने ज्ञापन दियो गयो। कलकत्ता में पैलीबार हाथां में पट्टियां अर पोस्टरां नै थामवा वाळा सैकडूं राजस्थानी वीरां सूधो एक इतिहासी जनशक्ति प्रदर्शन री धमक पूरै देस में गूंजी।

सन् 2003 में इयै जागरण सूं संचेतित हुया थका 'राना' संस्थान रा प्रवासी राजस्थानी हेताळुवां न्यूयार्क में आहूत कियो इंटरनेशनल राजस्थानी कन्वेन्शन। इण समारोह रै मंच सूं राजस्थान रा मुख्यमंत्री अशोकजी गहलोत नै भाषा मानता सारू मेमोरेन्डम दियो। सभा री इण लोकपहल रै कारणे ही 21 फरवरी 2004 रै दिन राजस्थान विधानसभा, सर्वसम्मति सूं राजस्थानी भाषा री संविधानी मान्यता प्रस्ताव पारित करनै केन्द्र नै भेज्यो।

मीडिया फ्रंट पर राजस्थानी लाडेसर पत्र रौ उदय

राजस्थानी री साहित्यिक पत्रकारिता रै क्षेत्र में श्री रतन शाह ने 22 अप्रैल 1967 रै दिन 'लाडेसर' (पखवाड़िये) री थरपना करी। एक घोष गूंज्यो राजस्थानी जणत में। म्हारै बरगा राजस्थानी लेखकां री एक बड़ी जमात इण पत्र मंच नै राजस्थानी री अस्मिता रक्षा री आधारशिला मानी। हजारू लोग इणनै अपनायो। विस्तारभय संकोच नै विराम देवता थका मैं आ बात अखरै-अखरै केवो चावूं कै इण पत्र रै मंच सूं राजस्थानी रा घर-बाहर रा विरोधियां, भीतराघाती तत्वां सूं कड़ो मुकाबिलो करनै 'राजस्थानी : एक सर्वतंत्र स्वतंत्र भाषा है, बोली नी।' आ बात लेखमाला पाण सिद्ध करी। इणी पत्र-पटल पर पैली बार 500 राजस्थानी लेखकां अर विद्वानां री सूची छापी। कई नामवर विशेषांक भी निसर्या।

म्हारौ लेखकीय जुड़ाव रतन शाह सूं इणी जांबाज पत्रोदय पाणहुयो। ओ जुड़ाव आज भी सध्यो थको है। मैं इणी जुड़ाव री निरपख पाण आ बात बेलाग रूप सूं कैवणो चावूंला कै रतन शाह, इण पत्र रै बूतै आपरी प्रसिद्धि, आत्मप्रचार अर हेतुवादी कांई महत्वाकांक्षा री सिद्धि रौ परचम नी लहरायो। एक प्रशान्त सम्पादक री आन्तरिक क्रांतिकारिता रै इणी तटस्थ भाव कारणे राजस्थानी री चेतनाशील साहित्यिक पत्रकारिता रौ लोकाधारी सरूप ऊभरतो इण पत्र रै माध्यम सूं। रा. प्र. सभा री बहुआयामी उपलब्धियां पेटे लाडेसर पत्र नै मैं एक लोक जागरण रौ युग प्रतीक मानूं।

जय राजस्थानी

सभा-मंच सूं राजस्थानी परीक्षा रौ संचालन, लेखकां रौ सनमान, गुजराती, मराठी भाषा कोषां में मारवाड़ी पर आपत्तिजनक उल्लेख समेत रतन शाह सदा सावचेत चेतावनी रा सुर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आवाज बुलंद करता थका फील्ड एन्टरप्राइजेज एज्यूकेशन कोरपोरेशन शिकागो पासी सूं सन् 1969 में प्रकाशित 'दी वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया डिक्शनरी (एल-जेड) में राजस्थानी नै हिंदी री बोली पेटै उल्लिखित करने पर सभा मंच सूं इण कोष रै प्रकाशक रिचर्ड ए. एटनउड नै सख्त विरोध पत्र भेज्यो।

रतन शाह री उपलब्धियां सारू राजस्थानी लोकचेतना संदर्भ में किणी सस्ती लोकप्रियता री दरकार नी है। 'राजस्थानी राखियां रहसी-राजस्थान' सूत्र रा साधक रतन शाह एकमात्र राजस्थानी राष्ट्रीय प्रवासी जनयोद्धा है जिका 72 वर्ष री उमर पौड़ी पार करता, आसन्न वृद्धावस्था नै पछाड़ता आज भी चिरयुवा रूप, मातृवाणी राजस्थानी रै वजूद अर इण सारू संविधानी मान्यता रै हकहकूक री जिन्दादिल जूझ सारता थका केवै- 'समाज री उन्नति अर पैछाण इण री भाषा पर निर्भर करे। जिकै समाज री भाषा मर जावै बो समाज धीरे-धीरे खतम हो जावै।'

आस्था का युग्मराग

स्वच्छता, सृष्टि का युग्म राग है

-डॉ. मालती शर्मा-

स्वच्छता सृष्टि का युग्म राग है
पतझड़ वसंत के दो तारों में
सृष्टि के कण-कण में बसा,
बजता हुआ
कि पेड़ से झड़कर ये पत्ते
नई कोंपलों फूलों के आने को रहने को
पेड़ का घर साफ करते हैं
कि स्वच्छता विश्व को
प्रकृति से मिला वरदान है
कि मनुष्य को मिले दो हाथ
जानवरों को पूंछ
पक्षियों को चोंच पंजे
स्वच्छता के लिए
कि कुत्ता भी बैठने के पहले
पूंछ से जमीन साफ करता है
कि गाय भैंस घोड़ा ऊंट पूंछ से
मक्खी मच्छर भगाते
अपना शरीर खुजलाते सहलाते हैं।
बधाई है, बधाई है, तुम्हें जन लोक की
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी
कि तुमने अब जाकर सुना
सृष्टि का यह युग्मराग
और बनाया उसे
देश का स्वच्छता अभियान
जबकि हमारे लोक परम्परित
पर्व, त्योहार, उत्सव, मेले
सदियों से है, स्वच्छता के
घर और बाहर की
तन और मन की
स्वच्छता के विश्व भर में अभियान
होली दीवाली तो है
पूरी स्वच्छता के महा अभियान
पर, प्रधानमंत्री जी!
स्वच्छता के इन
देशव्यापी अभियानों में
जरूरी है, जरूरी है,
अभी भी इनके साथ
जुड़ना प्रकृति का चर्या तत्व
कि कूड़े कचरे कबाड़ गंदगी का
मिट्टी हो, धरती बन जाना
और.......
कार्बनडाई आक्साइड का
पीपल के पत्तों से......
प्राणवायु बनना।

लेनोवो आइडियापैड 110 लैपटॉप की पेशकश

उदयपुर। पीसी निर्माता और टैबलेट एवं स्मार्टफोन बाजार की उभरती हुई कंपनी ने आइडिया पैड श्रृंखला के नवीनतम लैपटॉप लेनोवो आइडियापैड 110 की पेशकश की। खासतौर पर पहली बार कंप्यूटर खरीदने वालों के लिए बनाए गए आइडियापैड 110 में शानदार कीमत पर बेहतरीन ढंग से काम करने की सुविधा है। 20,490 रुपये की फिल्में देखना आसान बनाता है, लिहाजा इसके साथ एक्सटर्नल ड्राइव खरीदने की जरूरत नहीं होती है। यह वाई-फाई कनेक्टिविटी 3 गुना अधिक कनेक्शन स्पीड देता है जिससे यह तेज रफ्तार ब्राउजिंग, स्ट्रीमिंग और डाउनलोडिंग के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। इन्हीं इन-बिल्ट खूबियों की वजह से आइडियापैड 110 उनके लिए उपयुक्त है जो गैजेट

कीमत पर लेनोवो आइडियापैड 110 एबॅनी ब्लैक रंग में देशभर में सभी रिटेल स्टोर्स पर उपलब्ध है

लेनोवो इंडिया के मार्केटिंग निदेशक भास्कर चौधरी ने कहा कि इंटेल के नवीनतम सेलेरॉन डुअल कोर और पेंटियम क्वैड कोर प्रोसेसरों से सुसज्जित नया आइडियापैड 110 एक बेहतर हिंज डिजाइन के साथ आता है जो मजबूत है और फ्लैट पोजिशन में 180 डिग्री एक्शन की अनुमति देता है। लेनोवो की एडीपी नीति अचानक गिर जाने, टूटफूट, बिजली संबंधी गड़बड़ी या इंटीग्रेटेड स्क्रीन की परेशानी की वजह से होने वाले नुकसान को लेकर लैपटॉप पर किए गए निवेश की सुरक्षा करती है। यह मॉडल डीवीडी-सीडी ड्राइव के साथ आता है जो प्रोग्राम लोड करना, सीडी सुनना या ऑफलाइन और टैक्नोलॉजी की दुनिया से नाता जोड़ने जा रहे हैं।

चौधरी ने कहा कि आइडियापैड 110 एक ऐसा मूल्यवान लैपटॉप है जो इस्तेमाल करने वालों की जरूरतों से भरपूर है और इसकी कीमत भी बहुत ऊंची नहीं है। इसकी प्रोसेसिंग पावर, अच्छी मेमोरी, भरपूर स्टोरेज, आकर्षक डिस्प्ले और एकीकृत ग्राफिक्स इसे कॉलेज जाने वालों और युवा कामगार पेशेवरों के लिए सर्वश्रेष्ठ शुरूआती स्तर का लैपटॉप बनाता है। लेनोवो द्वारा हाल ही में शुरू किए गए बैक टू कॉलेज प्रयास के अंतर्गत कॉलेज जाने वाले युवा छात्र आइडियापैड 110 की खरीद पर अपनी जेब के अनुरूप और आकर्षक ईएमआई योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं। यह ऑफर सभी शहरों में 31 जुलाई, तक लागू होगा।

वोडाफोन एम-पैसा स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। भारत के अग्रणी टेलीकॉम सेवा प्रदाता वोडाफोन इण्डिया ने बाड़मेर में अपने एक्सक्लुज़िव 'एम-पैसा' स्टोर की ओपनिंग की। वोडाफोन इण्डिया में एम-पैसा के कन्ट्री हैड सुरेश सेठी ने कहा कि यह अनूठा स्टोर उपभोक्ताओं को एम-पैसा की सभी सेवाओं के लिए एक नकदर हित एवं सुरक्षित प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराएगा जिसमें मनी ट्रांसफ र, मोबाइल रीचार्ज, बिल एवं युटिलिटी भुगतान, एलआईसी प्रीमियम का भुगतान और मर्चेन्ट/ ऑनलाईन भुगतान शामिल है। स्टोर का उद्‌घाटन बाड़मेर के ज़िला कलेक्टर सुधीर शर्मा ने किया।

सुरेश सेठी ने कहा कि वोडाफोन एम-पैसा में हमने पारम्परिक मनी ट्रांसफर के दायरे से बाहर जाकर अपनी सेवाओं का विस्तार करते हुए युटिलिटी बिल के भुगतान, वेतन एवं अन्य भत्तों के भुगतान तथा डिजिटल भुगतान की प्रक्रिया को आसान बनाया है। पिछले 12 महीनों के दौरान उपभोक्ताओं को उनके मोबाइल फोन के माध्यम से अतिरिक्त सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए वोडाफोन ने कई नए साझेदारों के साथ हाथ मिलाएं हैं। बाड़मेर में इस पहले एम-पैसा स्टोर की ओपनिंग एक्षेत्र में बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं को अपनी सेवाएं प्रदान करेगी।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन में हम ऐसे उदाहरण पेश करते हैं कि लोग इसे तहेदिल से अपनाते है। उन्होंने कहा कि वोडाफोन एम-पैसा को इसी साल ग्रामीण संगठनों/ स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद के साथ साझेदारी की जिसके लिए राजस्थान सरकार के द्वारा इसे मान्यता प्रदान की गई।

वोडाफोन एम-पैसा बैंकिंग सेवाओं को फोन पर लाकर बैंकिंग को सुरक्षित, त्वरित एवं आसान बनाता है। एम-पैसा वित्तीय समावेशन एवं एम-कॉमर्स में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'एम-पैसा' मोबाइल भुगतान डोमेन में वोडाफोन की विश्वस्तरीय विशेषज्ञता का इस्तेमाल करते हुए देश भर में इसकी पहुंच को सुनिश्चित करता है। आईसीआईसीआई बैंक इसके वित्तीय लेनदेनों को पूरी तरह से सुनिश्चित बनाता है।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

टाटा का व्यापक अभियान

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने अपने सबसे लोकप्रिय लाइट कॉमर्शियल व्हीकल टाटा 407 की 30वीं वर्षगांठ मनाने के लिए व्यापक अभियान की शुरूआत की है। वर्ष 1986 में पेश की गई टाटा 407 श्रृंखला के अब तक छह लाख वाहन बेचे जा चुके हैं और यह अब तक ज्यादातर उभरते हुए उद्यमियों के लिए सबसे लोकप्रिय लाइट कॉमर्शियल व्हीकल बना हुआ है क्योंकि 4टी श्रेणी में बिकने वाले 10 वाहनों में से 7 वाहन टाटा 407 है, जिसकी वजह से कंपनी के पास 60 फीसदी बाजार हिस्सेदारी है। तीन दशकों से इसे खरीदने वाले करीब 50 फीसदी लोगों ने पहली बार इस का इस्तेमाल किया और इस ने भारत में स्वरोजगार के लिए एक अवसर मुहैया कराया है।

टाटा मोटर्स के कॉमर्शियल व्हीकल बिज़नेस यूनिट के कार्यकारी निदेशक रविंद्र पिशारोडी ने कहा कि टाटा 407 श्रृंखला एलसीवी उद्योग में अग्रणी है। एलसीवी श्रेणी में वाहनों की आकर्षक श्रृंखला के साथ टाटा 407 बेहतरीन प्रदर्शन और टिकाऊपन की गारंटी देता है।

अत्यधिक ढुलाई की क्षमता की जरूरत वाले सभी छोटे और मध्यम आकार के कारोबारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिहाज से टाटा 407 स्मार्ट मोबिलिटी सॉल्यूशंस के लिए उपयुक्त है। टाटा मोटर्स इस महीने सभी 400 शोरूम में अपने 6 लाख ग्राहकों के लिए समारोह का आयोजन कर रही है।

इसके साथ ही टाटा 407 ग्राहकों के लिए नि:शुल्क सर्विस चेक-अप की सुविधा भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि टाटा 407 भारत में ऑटोमोबाइल क्षेत्र में बेहतरीन प्रौद्योगिकी आधुनिकताओं का इस्तेमाल करने में अग्रणी रहा है।

हमारे पास

शब्द-रंजन है

अर्थ-रंजन नहीं

आपके पास जो भी है

कृपया सहयोग करें।

-डॉ. तुक्तक भानावत-

मो. 9414165391

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,

a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,

a/c type- Current a/c)

जैनविद्या के लिए संकल्पित डॉ. चोरड़िया

जैनविद्या के प्राच्य और समसामयिक साहित्य के उन्नयन, विकास और प्रकाश में समर्पित मद्रास विश्वविद्यालय में जैनविद्या विभाग, चन्दाप्रभु शाकाहार ग्राम, जैन विद्याश्रम विद्यालय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के स्थापक

जीवन में कभीकभाक ऐसी घटना घट जाती है जो कुछ अच्छा, श्रेष्ठ कार्य करने का सबब बन जाती है। ऐसा ही कुछ चैन्नई के डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया के साथ घटित हुआ। मात्र 27 वर्ष की उम्र में जब वे गंभीर रूप से बीमार हुए तो उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। उनकी बीमारी ने उन्हें मृत्यु का पालना तो दिखाया ही किंतु जीवन की आश-डोर भी नहीं टूटने दी। इसके लिए उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि यदि वे स्वस्थ हो गये तो जीवन का अधिकांश समय जैनविद्या के प्राच्य और समसामयिक साहित्य के उन्नयन, विकास और प्रकाश में समर्पित कर देंगे।

इस संकल्प से ही उन्हें जीवनदान मिला तथा बहुत कुछ, अहर्निश करने का धुन-धनी बना दिया। सुखद पक्ष यह भी रहा कि लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही उनके दोनों हाथ में क्रियमान थीं। ऐसा सोने के साथ सुहागा मिलना भी भाग्य का उदित योग ही कहा जायेगा। डॉ. चोरड़िया ने कभी लुंजपुंज सपनों की शरण नहीं ली। सदैव बड़ा सपना देखा, उसे पूरा किया और देखते-देखते वे स्वप्न-दर-स्वप्न के सुधीजन बन गये।

उनका एक बड़ा सपना तो यही था कि मद्रास विश्वविद्यालय में जैनविद्या विभाग प्रारंभ हो। इसकी पूर्ति के लिए 1982 में रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी (जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान) की स्थापना की और अगले ही वर्ष विश्वविद्यालय में जैनविद्या विभाग भी

अस्तित्व में आ गया। डॉ. चोरड़िया ने विभाग को स्थायी मान्यता मिलने तक उसे पूरी तरह संबल दिया। निरन्तर अकादमिक गतिविधियां संचालित कीं। वर्ष 2003 में तो यह एक स्थायी विभाग ही बन गया। वर्तमान में पूरे तमिलनाडु में विश्वविद्यालय स्तर पर सिर्फ यही एक जैनविद्या विभाग है।

जैनविद्या में एम.फिल. डॉ. चोरड़िया तमिल के श्रेष्ठ विद्वान तथा तिरुक्कुरल के विशेषज्ञ हैं। इस विशेषज्ञता के कारण उन्हें 1988 में तमिलनाडु नल्वळी निलयम द्वारा 'तिरुक्कुरल-रत्न' (मुप्पाल मामणी) सम्मान प्रदान किया गया। अक्टूबर-2013 में श्री कोयम्बतूर स्थानकवासी जैन संघ की ओर से उन्हें 'जैनविद्या-रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया। तमिल भाषा और साहित्य के दर्जनों सम्मान व पुरस्कार पाने वाले वे प्रथम राजस्थानी हैं। फरवरी-2015 में उन्हें अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय तमिल विश्वविद्यालय की ओर से मानद् डि.लिट्. की उपाधि प्रदान की गई।

जनवरी-1976 में उन्होंने अहिंसा सम्मेलन में महावीर जयन्ती के राजकीय अवकाश की जरूरत पर तमिल में व्याख्यान दिया। उसका असर यह पड़ा कि मंच पर उपस्थित तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने प्रतिवर्ष ही महावीर जयन्ती के सार्वजनिक अवकाश की घोषणा कर दी।

शाकाहार के प्रबल प्रचारक डॉ. चोरड़िया भारतीय शाकाहार कांग्रेस के दो दशक तक कोषाध्यक्ष रहे। सन् 1982-83 में चैन्नई में आधुनिक यांत्रिका बूचड़खाना खुलने वाला था। उसका विरोध करने पर उन्हें भारी सफलता और उतनी ही लोकप्रियता हासिल हुई। उन्होंने चैन्नई के निकट पूझल में सौ एकड़ की जमीन पर चन्दाप्रभु शाकाहार ग्राम (वेजिटेरियन विलेज) बसाया जिसमें सर्वथा शाकाहारी व्यक्ति ही निवास करते हैं। देश में इस तरह का यह प्रथम शाकाहार ग्राम है।

वर्ष 1995-96 में उन्होंने रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी के अन्तर्गत जैन विद्याश्रम विद्यालय की स्थापना की। बारह एकड़ भूखण्ड पर फैले इस विद्यालय में साढ़े तीन हजार से अधिक विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर रहे हैं। डॉ. चोरड़िया के नेतृत्व में जैनविद्या और प्राकृत में सतत अनुसंधान, लेखन एवं प्रकाशन जारी है। अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र उनकी दूरदर्शिता से सक्रिय है। सम्प्रति तमिलनाडु हिन्दी अकादमी के कार्याध्यक्ष भी हैं।

-डॉ. दिलीप धींग

अनहद नाद

-डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ-

मेरे आत्मज्ञ!
मेरे मन के सबसे रंगीन फूल
तुम यों ही महकते रहना
तितलियों के पंखों की छुअन सी
मधुमय सिहरन से
मेरा रोम-रोम प्रकम्पित करते रहना
देह-वाणी पर
आत्मा का मधुरिम
स्वप्निल संगीत
तुम सुन रहे हो न!
मेरे गीत सहचर!!
एक विचलन और
एक प्रकम्पन
आलोक धन्वा तानकर
अधरों से स्फुरित होता है
मेरा व्याकुल मन संगीत
तुम सुन रही हो न!
मेरे कल्पना सहचरी!!
तुममें दीप्ति, सुकोमल स्मृति
अतलान्त सागर सा गहरा
पर घुमड़ता, उमड़ता
ज्वार-भाटों में
चन्द्रमा के आकर्षण-विकर्षण से
प्रतिपल खींचता तनाव की
निर्मम-मधुर पीड़ा झेलता
तुम्हारा उल्लसित नेह
पवित्र स्नेह!
जनम-जन्मान्तर की
इस बंधन बांसुरी को
तुम सुन रहे हो न!
मेरे अनहद-नाद!!
एक सागर उछाल भर-भरकर
तुम तक आने को बार-बार
सारी सीमाएं तोड़
उद्दाम आवेग से बह उठता है।
अपने साथ अपने तल में
जाने कितनी सीपियां, शंख
और अतलान्त चट्टानों पर
खिलने वाले
मधुमय अनुभूतियों के
ऐसे फूल खिलाता रहता है
जो पानी के थपेड़ों
हिंसक जलचरों और
मछलियों के बीच
उनसे स्पर्शित और संघर्षित
हो-होकर भी अपना सौंदर्य
और मधु मर्म महनता नहीं छोड़ता
तुम देख रहे हो न!
इसके सौंदर्य को!
मेरे साकार सौंदर्य-बोध!!
मेरे आत्मज्ञ!
मेरे गीत-सहचर!!

हिटाची केमिकल और एएलएफ टेक्नोलॉजीस में गठबंधन

उदयपुर। हिटाची समूह, जापान की एक कम्पनी हिटाची केमिकल कम्पनी लि. ने अहमदाबाद स्थित एएलएफ टेक्नोलॉजी के साथ भागीदारी की औपचारिक घोषणा की है। इस भागीदारी के तहत एएलएफ टेक्नोलॉजीस हिटाची ऑटोमोटिव बैटरीज का भारत में निर्माण करेगा। हिटाची केमिकल एशिया पैसिफिक पीटीई लि. सिंगापुर के निदेशक जैकी चुह ने कहा कि हिटाची बैटरीज अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विगत 10 वर्षों से मौजूद है और आज इस उद्योग की प्रमुख कम्पनी है। हिटाची केमिकल ने अपने ब्राण्ड की कार बैटरीज भारत में वर्ष 2015 में लांच की थी और अब यह नए वाणिज्यिक वाहनों के लिए बैटरी उपलब्ध करवाने के साथ ही अपनी कार बैटरी रेंज का भी विस्तार कर रही है। एएलएफ टेक्नोलॉजी वर्ष 2010 में गठित हुई और इसकी पूरे भारत के ऑटोमोटिव बाजार में लेड-एसिड बैटरीज की विशाल श्रृंखला के साथ उपस्थिति है।

जैकी चुह ने कहा कि हमने हमारे उत्पादों को दक्षिण पूर्वी एशिया में वर्ष 2013 में लांच करने के बाद 2015 में भारत में लांच किया था। भारत हमारी स्वाभाविक पसंद है क्योंकि यह एशिया का दूसरा तथा विश्व का छठा सबसे बड़ा पैसेंजर कार बाजार है। भारतीय बैटरी उद्योग की विकास दर वर्ष दर वर्ष के आधार पर वर्ष 2015-16 में 9-10 प्रतिशत रही इस अवधि में घातांक प्रतिस्थापना (एक्सपोटेंशियल रिप्लेसमेंट) बाजार संभावना 18 मिलियन यूनिट ऑटोमोटिव बैटरीज तथा 30 मिलियन युनिट्स टूव्हीलर्स बैटरीज के लिए रही। हम हिटाची केमिकल में आधुनिक युग की प्रौद्योगिकी एवं ऑटोमेशन अपना रहे है ताकि हमारी बैटरीज का प्रदर्शन उच्च गुणवत्तायुक्त एवं विश्वसनीय हो। महत्वपूर्ण रूप से हमारा एनर्जी स्टोरेज डिवाइसेज हिटाची केमिकल के कुल कारोबार का 20 प्रतिशत है।

पार्थ जैन, निदेशक एएलएफ टेक्नोलॉजीस (इण्डिया) प्रा.लि. ने कहा कि हिटाची केमिकल कं. लि. और एएलएफ टेक्नोलॉजीस के मध्य इस तालमेल के चलते हिटाची ऑटोमोटिव बैटरियां पूरे भारत में अगले 3 वर्षों में 10,000 से भी अधिक काउण्टर तक इसकी उपस्थिति हो जायेगी। हिटाची केमिकल्स की ब्राण्ड विरासत और टेक्नोलॉजी पावर्स के साथ ही हमारे विस्तृत वितरण नेटवर्क से आशा है कि हम आने वाले 3 से 5 वर्षों के भीतर ऑटोमोटिव बैटरी बाजार में 10 प्रतिशत भागीदारी प्राप्त करने में सफल रहेंगे, तथा इसी समयावधि में हमारा कारोबार 250 करोड़ रुपए तक पहुंचने की संभावना है।

'नमक के वास्ते' अभियान

उदयपुर। भारत में ब्रांडेड नमक बाज़ार की अग्रणी टाटा सॉल्ट ने 'नमक के वास्ते' नाम से एक महत्वपूर्ण अभियान शुरू किया है, जिसका उद्देश्य भारतीय ओलिंपिक खिलाड़ियों के लिए चर्चा और जनसमर्थन जुटाना है।

टाटा केमिकल्स लि. (कंज्यूमर प्रोडक्ट्स बिज़नेस) के प्रमुख-मार्केटिंग सागर बोके ने कहा कि टाटा सॉल्ट ने भारतीय ओलिंपिक दल के गौरवशाली प्रायोजक के तौर पर भारतीय ओलिंपिक संघ (आईओए) के साथ गठजोड़ किया है और कम चर्चित खेलों के बारे में जागरूकता लाने और इस साल रियो में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों के लिए जनसमर्थन हासिल करने के लिए समर्पित है।

इस अभियान के तहत 1.2 अरब आबादी वाले जनसमर्थन में उदासीनता के प्रति बदलाव की चिंगारी जलाना है। 'नमक के वास्ते' टाटा सॉल्ट के इनोवेटिव ब्रांड निर्माण और विशिष्ट अभियानों के माध्यम से वर्षों से ग्राहकों के भरोसे को बनाए रखने के सफर की दिशा में एक कदम आगे है। यह अभियान को वीडियोज़ सीरीज़ के साथ इस माह की शुरूआत में ही लाइव किया गया है, जिसमें जीत के प्रति एथलीटों की अदम्य भावना और जुनून को अभिव्यक्त किया गया है। उन्होंने कहा कि इस अभियान के लिए कम चर्चित चेहरों के साथ करार किया है, जिसका उद्देश्य उन्हें समुचित मान्यता और प्रशंसा दिलाना है।

'नमक के वास्ते' एक मार्केटिंग अभियान है, जिसके तहत् देशभर के लोगों तक अपना संदेश पहुंचाने के लिए डिजि़टल और सोशल मीडिया, रेडियो और टीवी का सक्रियता से इस्तेमाल किया जाएगा। इसके तहत् ग्राहक मिस्ड कॉल कर भारतीय ओलिंपिक दल के समर्थन के लिए अपनी शुभकामनाएं रिकॉर्ड कर सकते हैं।

ओगिल्वी वन इंडिया के अध्यक्ष एवं कंट्री हेड विक्रम मेनन ने कहा कि इस अभियान का विचार ओलिंपिक के खिलाड़ियों के सफर का समर्थन और भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्हें उत्साहित करने की जरूरत के साथ शुरू की गई है। हम टाटा सॉल्ट के साथ साझेदारी कर बहुत खुश हैं और डिजि़टल वीडियोज़ की श्रृंखला बनाई है, जिसका उद्देश्य दर्शकों को इन एथलीटों की कहानियों की वास्तविकता से रूबरू करना और ओलिंपिक में उनकी यात्रा के लिए समर्थन करने की खातिर लोगों को प्रोत्साहित करना है।

(पृष्ठ दो का शेष)
- लोकचेतना की खुली बहस....

नई दिल्ली-110001
दिनांक : 15.1.1973

प्रिय डॉ. भानावत,

आपका 4 जनवरी का पत्र मिला। सांझी के चित्रों में आपने जो अलग-अलग नाम दिये हैं उनका मैं उन नामों से मिलान करूंगा जो हमारे परिवार की दीवाली और अहोई के चित्रों में दिये जाते हैं। चौपड़, अठपंखुड़ी फूल और संजा विवाह; इन चित्रों का हमारे यहां की अहोई आठे के चित्रों से कुछ साम्य है। संजा शब्द की क्या व्युत्पत्ति है, यदि इसकी भी सूचना मिल सके तो कृपया मुझे भी बताइयेगा। हमारे यहां चित्र रंगीन होते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि उनकी कलात्मकता कुछ अधिक निखरी हुई है। यदि आप दिल्ली आएं तो आपको दिखाऊंगा।

आपका
जगदीशचंद्र माथुर

जिंक़ का शुद्ध लाभ 47 प्रतिशत घटा

उदयपुर। वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक़ ने मुम्बई में आयोजित अपनी निदेशक मण्डल की बैठक में 30 जून, 2016 को समाप्त पहली तिमाही के वित्तीय परिणामों की घोषणा की।

हिन्दुस्तान जिंक़ के चेयरमैन अग्निवेश अग्रवाल ने बताया कि अपेक्षाओं के अनुकूल तथा श्रेष्ठ प्रदर्शन एवं सुदृढ़ स्थिति के साथ जिंक़ की वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में जस्ता कीमतों में वैश्विक बाजार में पहले की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वित्तीय वर्ष के दौरान गतवर्ष की तुलना में वैश्विक चांदी बाजार सुदृढ़ हुआ है जिससे उत्पादन में 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। भूमिगत खदानों में गत महीनों से खनन विकास कार्य प्रगतिशील है तथा भूमिगत खदानों में उत्पादन का संचालन कार्य सफलतापूर्वक हो रहा है। इसी प्रकार वित्तीय वर्ष 2017 की पहली तिमाही में 127,000 टन खनित धातु उत्पादन हुआ जो कि वित्तीय वर्ष 2016 की पहली तिमाही की तुलना में 45 प्रतिशत कम तथा गतवर्ष की चौथी तिमाही की तुलना में 33 प्रतिशत कम रहा। तिमाही के दौरान उत्पादन में कंपनी की रामपुरा आगूचा खदान से उत्पादन कम होने से प्रभावित रहा वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही के दौरान रिफाईन्ड जस्ता धातु का उत्पादन गतवर्ष की समान अविध की तुलना में 46 प्रतिशत तथा चौथी तिमाही की तुलना में 33 प्रतिशत कम रहा। एकीकृत सीसा धातु उत्पादन भी गतवर्ष की तुलना में 11 प्रतिशत तथा चौथी तिमाही की तुलना में 34 प्रतिशत कम रहा।

वित्तीय वर्ष 2017 की पहली तिमाही के दौरान कंपनी ने 2,501 करोड़ रु. का राजस्व अर्जित किया जो गतवर्ष की इसी अवधि की तुलना में 30 प्रतिशत कमी दर्शाता है। राजस्व में कमी लन्दन मेटल एक्सचेंज में कीमतों में कमी के परिणास्वरूप हुई है। वित्तीय वर्ष 2017 की पहली तिमाही में कंपनी ने 1,037 करोड़ रु. का शुद्ध लाभ अर्जित किया है जो गतवर्ष की पहली तिमाही की समान अवधि की तुलना में 47 प्रतिशत तथा चौथी तिमाही की तुलना में 52 प्रतिशत कमी दर्शाता है।

पोथीखाना

खड़े रहते हैं घर

बहन मालतीजी की कविता पुस्तक 'खड़े रहते हैं घर' देख पहले तो आवरण पर ही सम्मोहित, अटकी रह गई! किवाड़ों पर स्वस्तिक, अलग रचे आले, ईंटें.. घर बने, न जाने कितनी कहानियां कह गए। झूलों की पेंगें, सारा अतीत हलकोर आईं। इन कविताओं में लेखिका ने घर को कितने रूपों में सिरजा है। जितने करूण, उतने ही मधुर, अवसादी...... रंग, रूप, छटा और छवि से सम्पृक्त जीवन इस 'घर' में समाया है। लोक से शास्त्र तक, भावना से विचार और तर्क तक, सब कुछ समेटा है इस 'घर' में।

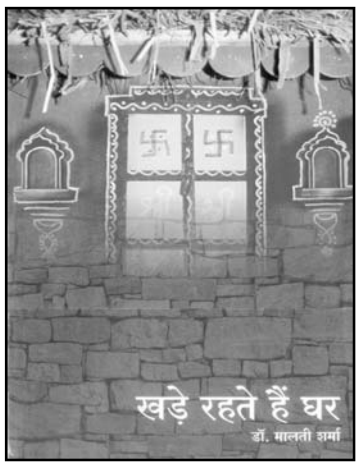

'घर' से जितने छोटेपन का आभास होता है उससे सर्वथा विपरीत बहुत गहरे, बहुत फैले होते हैं ये घर-आंगन! सभी कविताएं इस विस्तार और गहराई की शोध करती दृष्टिगत होती हैं। यह भी कि कितना महत, कितना अमूल्य छूटा जा रहा है आज हमारे जीवन से! ये कविताएं उन घरों का दर्शन कराती हैं जहां मनुष्यता को पनाह मिल सकती है। जो अन्तत: मानवीय संवेदना की एकमात्र शरणस्थली है।

-सूर्यबाला

पाबूजी की पड़

भारतीय समाज जिस तरह 'अभिजनों' और 'लोक' में बंटा है उसी तरह उसके देवता भी बंटे हैं। विष्णु जैसे अभिजनों के सम्मानित देवता हैं उसी तरह पाबूजी लोकदेवता हैं। देवरों में असंख्य जनों के 'हृदय हार' बने हुए। उनके क्लेश, उनके रोग-शोक, उनके गार्हस्थ-जीवन की पीड़ाओं को हरते हैं।

पाबूजी के इसी लोकमंगलकारी रूप पर डॉ. महेन्द्र भानावत की यह पुस्तक आधारित है। उनके अनुसार पाबूजी रेबारी जाति के सर्वाधिक मान्यता प्राप्त देवता हैं। रेबारी जाति ऊंटों को पालने, उनका व्यवसाय करने वाली, उनके द्वारा अपना जीविकोपार्जन करने वाली, पशु-पालक जातियों में से है। पाबूजी इन पशुओं की महामारियों से रक्षा करते हैं और इस प्रकार रेबारियों के आर्थिक कुशलक्षेम के संरक्षक देवता की तरह प्रतिष्ठित हैं।

इस पराक्रमी आध्यात्मिक और आलौकिक 'शक्ति-सम्पन्न ' देवता का जीवन राजस्थान में चित्रों और कथाओं के माध्यम से 'फड़ों' पर उकेरा और गाया जाता है। चित्रांकण शैली के पूर्व और आधुनिक रूपों पर डॉ. भानावत ने गहन अध्ययन किया है और उन चितेरों के वंशों पर भी प्रकाश डाला है जो 'फड़' चित्रण में कुशल हैं और देश-विदेशों में इस समृद्ध कला को कालजयी करने में लगे हैं। डॉ. भानावत के अनुसार पड़ बनाने वाले पारंपरिक चित्रकार छींपा जाति से संबंधित हैं। इनका मूल स्थान शाहपुरा रहा। वर्तमान में भीलवाड़ा और शाहपुरा ही इनके मुख्य केन्द्र हैं। पड़ चितराई में श्रीलालजी ने सर्वाधिक प्रसिद्धि ली।

पाबूजी की गाथा अद्भुत घटना केन्द्रों की आकर्षक संयोजना है। इस गाथा में वीरवर पाबूजी का शौर्य और उल्लास तथा लोकजीवन के साथ प्रगाढ़ आत्मीयता प्रेरणा का केन्द्र बनी रहती है। गाथा की सबसे बड़ी ताकत दर्शकों को अनेक तरह से बांधे रखना है। ताल से, छंद से, कथन से, ऐसे पात्रों से जो गांव के हैं, थोड़े मनमौजी, नशापता करने वाले, वीर-धीर पाबूजी अपनी भतीजी को सांड-सांडनियां देने के लिए लंका जाते हैं।

लंका में पाबूजी के साथी डेमाजी रावण की रणबांकुरी सेना का आनन-फानन में सफाया कर देते हैं। कथा का अंत गौ-रक्षा के पुनीत अनुष्ठान से होता है। पाबूजी विवाह के दो फेरे ले चुके हैं और गउओं के घेरे जाने की खबर देने के लिए चील बनकर आई भवानी चारणी कूक उठती है। तीसरा फेरा पूरा नहीं होता और पाबूजी गऊ रक्षा की प्रतिक्षा के लिए चले जाते हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने कथा के मूल रंग को पद्य और गद्य में प्रस्तुत किया है और साथ में हिंदी में अनुवाद भी। प्रमाद रहित होकर उन्होंने पाबूजी के फड़ के चितेरों की, भोपों की, गाथा-गायकों की इतनी प्रचुर जानकारियां दी हैं कि शोधकर्त्ता और राजस्थान के लोक जीवन में रूचि रखने वाले प्रसन्नता का अनुभव करें।

-नंद चतुर्वेदी

कविराव मोहनसिंह

कविराव मोहनसिंह राजस्थानी भाषा के, मेवाड़ी अंचल के ख्यातनाम साहित्यकार थे। वे गद्य एवं पद्य दोनों साहित्य-रूपों के विद्ग्ध विद्वान थे। उन्होंने राजस्थान में प्रचलित डिंगल और पींगल उभय काव्य-शैलियों में प्रभूत मात्रा में सर्जन किया है।

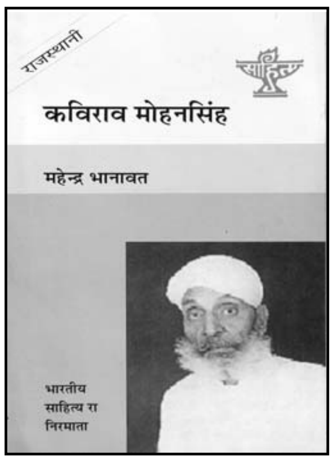

भारतीय साहित्य के निर्माता साहित्यकार प्रकाशन माला के कविराव मोहनसिंह विनिबंध के लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत हैं जो कविराव मोहनसिंह के साथ रहे थे। इसलिए विनिबंध लेखक ने कविराव के प्रकाशित व अप्रकाशित समस्त कृतित्व का विलोड़न कर यह विनिबंध लिखा है।

कविराव मोहनसिंह शीर्षक के अन्तर्गत महताऊ मेवाड़, राव जाति रो ख्यातनामो, कविराव मोहनसिंह रो बालपणो, महाराणा री मनसा, कवि रो व्यक्तित्व, उदैपुर में निवास, रचना-प्रक्रिया, रचनावां में छाप, संगीत रा भेद, याद राखण जोग घटनावां और उनके रचनाकर्म पर सारग्राही प्रकाश डाला है। कवि की काव्यकृतियों को प्रबंध काव्य, चरित्र काव्य, खंड काव्य, प्रशस्ति काव्य और मुक्तक काव्य में विभाजित कर कृतियों का संख्यामूलक वर्गीकरण किया है- जैसे अष्टक संज्ञक 27, पच्चीसी 9, बत्तीसी 9, बावनी 2, बहत्तरी 2, छिहत्तरी 1, शतक 6, सतसई 2 ; तदुपरांत विधामूलक वर्गीकरण किया है।

इस वर्गीकरण में प्रकाश संबोधित 4, विलास 1, नीसाणी 1, जस 5, आख्यान 1,वारता 1, भूषण 1, मरसिया 1, अलंकार 3, चरित 4, पदावली 1 तथा स्फुट 5 कृतियों का विवेचन किया है। कवि सर्जित कृतियों के परिचय के पश्चात संपादित पुस्तकों में डिंगल गीत (संकलन) 8 भाग, और पृथ्वीराज रासो (कई भागों में) उल्लेखित है।

मौलिक सिरजण में कवि प्रणीत उपर्युक्त कृतियों के सोदाहरण परिचय दिये हैं। परिशिष्ट में रचनाओं के नमूने प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार विनिबंध लेखक ने साहित्यकार मोहनसिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व के सभी पक्षों का विवेचन कर मूल्यांकन किया है।

-सौभाग्यसिंह शेखावत

भारतीय भक्ति साहित्य का समवेत

अर्द्धवार्षिक 'समवेत' पत्रिका का जून 2016 का यह अंक भारतीय भक्ति साहित्य का समवेत ही है। डॉ. नवीन नंदवाना ने बड़े मनोयोग से विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित 22 महत्वपूर्ण आलेख देकर भक्ति साहित्य की समग्र अन्त:चेतना और प्रमुखता को समन्वित कर इसे संग्रहणीय बनाया है।

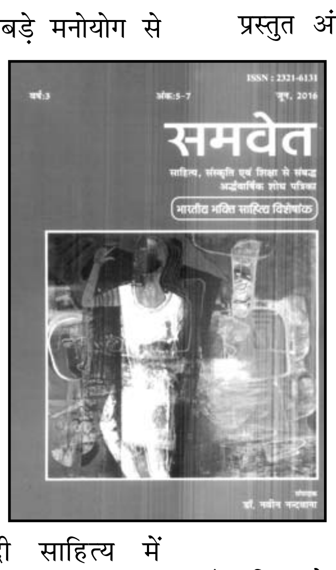

यों भी हिंदी साहित्य में भक्तिकाल का समय जितना विविधता से आकलित है, दूसरा कोई काल नहीं मिलेगा। इसी काल में सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, रसखान, मीरांबाई हुए तो संत दादू, रैदास, सुंदरदास, जंभेश्वर, दुर्बलनाथ, शंकरदेव जैसे संतों ने अपनी वाणियों तथा उपदेशों द्वारा जनमानस को भक्तिमय जीवन जीने और ईश्वर के प्रति आत्मस्थ बने रहने की प्रेरणा देकर सर्वजन सुखाय का संदेश प्रचारित किया।

प्रस्तुत अंक में भक्तिकाल के विभिन्न स्थापित कवियों तथा संतों के जीवनधर्मी आकलन, उनके द्वारा रचित साहित्य तथा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक क्षेत्र में उनके प्रभाव, दर्शन, साधना, कर्म, सरोकार तथा सांस्कृतिक चेतना पर ख्यात विद्वानों द्वारा विशद मूल्यांकन किया है।

इस दृष्टि से 184 पृष्ठों में संयोजित इस त्रियुक्तांक का मूल्य 200 रुपये रखा गया है। छात्रों में इसका अधिकाधिक उपयोग हो, इस दृष्टि से यह मूल्य भार देने वाला ही है।

-डॉ. कहानी भानावत

कान्यो मान्यो

ऊंदरो अलस्यो नै लाईट

कान्यो बड़ी हड़बड़ाहट में आकर बोला- गजब हराबोर हो गया। मान्यो बोला- ढबजा बेटी का बाप, थोड़ो विसरामो ले ले। घूंट दो घूंट ठंडो पाणी पीले फिर संतोख से अपणी बात सुनाय। इतना सुन कान्यो ठंडप से बोला- हेंग रात कभी झरझर तो कभी पीट्टो पड़तो र्‌यो। अतराक में लाइट गुम हुईगी। कोई पांचेक वज्यां रसोड़ा में बरतन खणखणाया। मोबाईल री रोशनीऊं लागो एक मोटोताजो ऊंदरो पछोकड़ाऊं आव परो। कायो-कायो रसोड़ो बंद कीधो। कटांजरा में हरवे रे तेल चुपड़ रोटी रो कवो मेल कंवाड़ बंद कर दीधा। बारणे वासबेसीन में राता डोरा जस्यो हरवर करतो नजर आयो। वो अलस्यो हो।

मान्यो विचार में पड़ग्यो के यो तो कान्यो हो जो नवेड़ लीधो। कोई दूजो हो तो, पड़ोस्यां री नींद हराम कर देतो। ऊंदरो तो फेर भी पाइप के आसरे कठेई पोंचजावे पण अलस्यो जस्यो जीव रळकतो-रळकतो केई मुसबतां नै पार कर दूजी मंजल तांई पोंचजावे तो अचम्बो तो है ई। ऊंदरो तो तोड़फोड़ करे। जीणो हराम करदे। पिंजरा में होरेहार नी आवे तो दवा मिली आटा री गोल्यां दवा र वीने सबक देणो पड़ी पण अलस्यो तो दो दन रो जीव है। वने मार पाप क्यूं मोल लां। वो तो आपुंई हरि शरण हो जाई। देखतां-देखतां अलस्यो ज्यूं आयो, पाछो जारे परो। म्हूं सोच पड़ग्यो, यो भोलो जीव क्यूं तो आयो ने क्यूं पाछो वगर व्याम्बो ले गयो परो।

लाइट गी तो असी गी के पाछी फरकी जोवारोई कामनीं। अंधारा में छोरा रे इस्कूल रो टिफिन नी बण्यो। ऊंदरा रे ओजकाऊं रसोड़ा में जावण री हिम्मत टूटगी जदी सगला टीवी फ्रिज तक री लाइटां ऑफ करने बैठग्या। अतराक में भलो वीजो पड़ोसी रो जठूं छेटी वेता थकां भी अचाणचक आवाज आई एक बालकी री, 'मम्मी लाइट आईगी।' पतो चलो कि पड़ोसी तो पड़ोसी होते हैं। कोई भी काम हो, आधीरात चाहे पारली रात, वगत बेगत पड़ोसी ही काम आवे है।

राजस्थान विद्यापीठ विवि द्वारा उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास' पर राष्ट्रीय सेमीनार

उदयपुर। शिक्षा का उपयोग समाज, राष्ट्र एवं विश्व के हित में होना चाहिए। उच्च शिक्षा के लिए नवीन पॉलीसी लानी होगी। उसके साथ कोशल विकास को बढ़ावा देना होगा। प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शामिल करने होंगे। जापान, उत्तरी कोरिया, चाईना सहित विश्व के अन्य देश अपने बजट का 15 प्रतिशत शिक्षा एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने पर खर्च करते है।

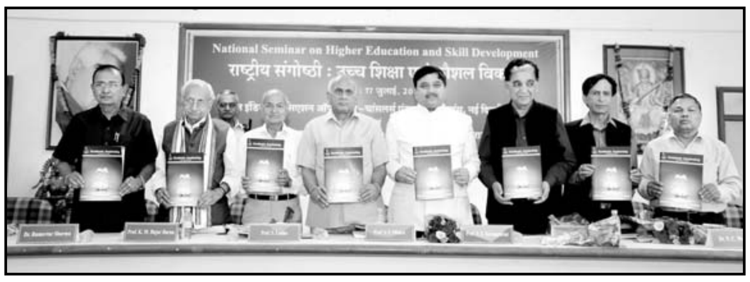

हमें प्रोडेक्ट निर्माण से पहले सम्पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना होगा। ये विचार यूजीसी सदस्य प्रो. आई. एम. कपाही ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि एवं ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एवं एकेडमिशियन्स नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता प्रो. प्रेमा झा ने देश में खुल रहे विश्वविद्यालयों की होड़ बंद कर ग्रामीण स्तर पर छोटे कौशल विकास केन्द्रों के व्यावसायिक केन्द्र शुरू किये जाने का सुझाव दिया जिससे ग्रामीण एवं निचले स्तर का व्यक्ति अपने गांव में ही रोजगार उपलब्ध कर सके। उन्होंने कहा कि जिला एवं तहसील स्तर पर आईटीआई, पोलोटेक्निक सेंटर, लेबोरेट्री ट्रेनिंग, घरेलु स्तर पर शोर्ट टर्म कोर्स जैसे बंधेज, सिलाई, वेल्डिंग, कारपेंटर, कठाई, बुनाई, समेकित कृषि, हार्डवेयर, पेरामेडिकल कॉलेज, केटरिंग कोर्सेस, बेसिक कम्प्यूटर, बागवानी, इंटीरियर डेकोरेशन आदि खोले जाने चाहिए।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में जयनारायण व्यास विवि के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने कहा कि बेरोजगारी दूर करने के लिए प्रारंभ से ही शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ना होगा। प्राचीन समय में पापड़ बनाना, रंगाई, छपाई, सिलाई जैसे कई रोजगार थे लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में इनमें निखार लाना होगा।

प्रारंभ में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने स्वागत करते हुए कहा कि देश के 60 प्रतिशत लोग असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं। यहां सिर्फ 03 प्रतिशत लोग ही स्कील हैं। इसलिए कौशल विकास के पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन की ओर विशेष अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने पुरानी परम्पराओं को नवीन स्कील डवलपमेंट के साथ जोड़े जाने की आवश्यकता बताई। संगोष्ठी में प्रो. बी.आर छीपा, प्रो. एस.पी. मिश्र, प्रो. एस. लोढा, प्रो. बी.एम. बुजर, डॉ. रामअवतार शर्मा, प्रो. वीरेन्द्र नाथ पांडेय, डॉ. एन. सी. बधवा की वैचारिक उपस्थिति महत्वपूर्ण रही। संचालन डॉ. अमी राठौड़ एवं डॉ. देवेन्द्रा आमेटा ने किया जबकि धन्यवाद प्रो. बी.एन. पाण्ड्ेय ने ज्ञापित किया।

आयुर्वेदिक मधुमेह-रोधी दवा बीजीआर-34 की शुरूआत

उदयपुर। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने बीजीआर-34 नामक सर्वप्रथम एंटी-डायबेटिक आयुर्वेदिक दवा को डीपीपी4 निरोधात्मक गतिविधियों के साथ शुरूआत की। बीजीआर-34, जिसे टाइप 2 प्रकार के डायबिटिज़ मेलिटस के लिए तैयार किया गया है, को इसकी प्रभाविता और सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक तौर पर सत्यापित किया गया है। बीजीआर-34 को संयुक्त तौर पर राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) और केन्द्रीय औषधीय और सुगंधित पौधे संस्थान (सीमैप) द्वारा तैयार किया गया है जो कि सीएसआईआर, भारत सरकार की लखनऊ में स्थित अनुसंधान इकाइयां हैं। लोगों के लिए इसके वृहद फायदों को देते हुए, वैश्विक तौर पर डीपीपी4 अवरोधकों के मुकाबले बीजीआर-34 की कीमत केवल पांच रूपये प्रति गोली रखी गई है।

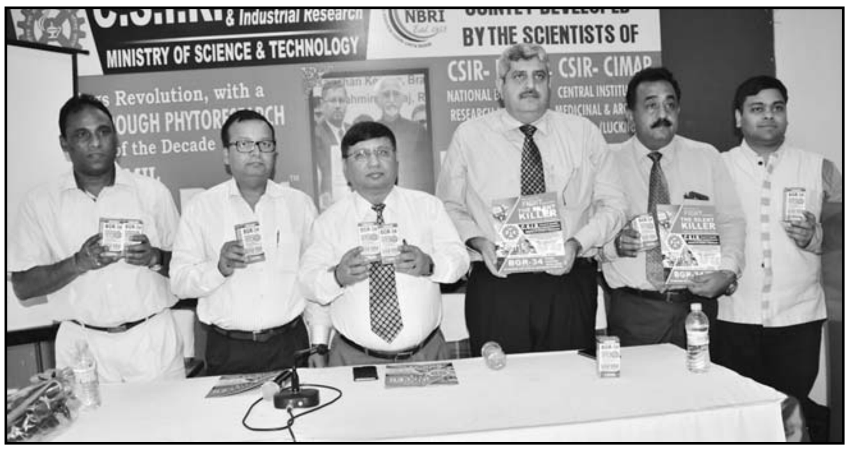

डॉ. ए. के. एस. रावत, वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनबीआरआई ने कहा कि हम चिकित्सा क्षेत्र के विख्यात पेशेवर टाइप 2 प्रकार के डायबिटिज़ मेलिटस से पीड़ित मरीजों को यह दवा सिफारिश करेंगे जिससे कि त्वरित और सुसंगत प्रतिक्रिया प्राप्त हो सके। बीजीआर-34 रक्त में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित कर अन्य दवाओं के हानिकारक प्रभावों को कम करता है। उन्होंने बताया कि एनबीआरआई तथा सीमैप के वैज्ञानिकों ने 500 से अधिक विख्यात प्राचीन जड़ी-बूटियों का गहराई से अध्ययन किया और ऐसी 6 सबसे बेहतर जड़ी-बूटियों की पहचान की जिनका उपयोग आयुर्वेदिक प्राचीन ग्रंथो में विभिन्न बीमारियों के लिए किया जाता है। इनमें दारुहरिद्रा (बरबेरिसारिस्ताता), गिलॉय (टाइनोस्पोरैकोर्डिफोलिया), विजयसार (टेरोकारपुस मारसुपियम), गुडमर (जिम्नेमासिल्वेटर), मजीठ (रुबियाकोर्डिफोलिया) और मेथिका (ट्रिग्लोनेलाफोएनुम-ग्रेयकुम) जिन्हे एक अद्‌भुत मधुमेह विरोधी सूत्रीकरण विकसित करने के लिए विभिन्न भागों और मात्रा में मिश्रित किया और संसाधित किया गया।

डॉ. दया नंदन मणि, सीनियर साईंटिस्ट, सीएसआईआर एनबीआरआई ने कहा कि इस एंटीडायबिटिक फॉर्मूला के प्रि-क्लिनिकल अध्ययनों में इस दवाई द्वारा डायबिटीज़ से पीड़ित मरीजों के खून में शूगर की मात्रा में काफी कमी देखी गई, जबकि इसमें गतिविधि का स्तर रिफरेंस स्टैंडर्ड एलोपैथिक दवाई के तुल्य ही था। साथ ही इस दवाई ने एलएफटी, केएफटी एवं लिपिड प्रोफाईल में भी काफी सुधार किया। इसने आवश्यक एंटीऑक्सीडेंट प्रोटेक्टिव गतिविधि भी प्रदान की। इस पूरे अध्ययन में दवाई के कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं देखे गए।

पंकज मरवाहा, मार्केटिंग डायरेक्टर, एआईएमआईएल फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) लि. ने कहा कि बीजीआर-34 हर्बल स्रोतों से फाईटो-कॉन्सटिट्युएंट्स के साथ खून में ग्लूकोज़ की मात्रा नियंत्रित करता है। डॉ. अनिल कुमार शर्मा, वाईस प्रेसिडेंट (टेक्निकल), एआईएमआईएल फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) लि. ने कहा कि बीजीआर-34 एक अद्वितीय उत्पाद है, जो डायबिटीज़ से पीड़ित मनुष्यों का इलाज करता है। इसका एक महत्वपूर्ण अवयव डीपीपी-4 पर रोक लगाता है और इंसुलिन का उत्सर्जन बढ़ाता है। सीएसआईआर दिवस पर सीएसआईआर-एनबीआरआई की ओर से बीजीआर-34 के औपचारिक लॉन्च के 8 महीनों के भीतर ही कंपनी ने लगभग 15 करोड़ टेबलेट निर्मित करके लगभग 100 मेडिकल रिप्रेज़ेंटेटिव्स की मदद से लोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दी हैं।

बांग्लादेश के गृहमंत्री ने किया सिटी पैलेस और मोतीमगरी का भ्रमण

उदयपुर। बांग्लादेश के गृहमंत्री अस्सादुजमान खान ने अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों के साथ शुक्रवार को उदयपुर में ऐतिहासिक सिटी पैलेस और महाराणा प्रताप स्मारक समिति मोती मगरी का भ्रमण किया। फाउण्डेशन के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्र सिंह आउवा ने बताया कि बांग्लादेश के गृहमंत्री ने सिटी पैलेस के जनाना महल, सिल्वर गैलेरी एवं कॉस्ट्यूम गैलेरी को निहारा और भूरि-भूरि प्रशंसा की। आउवा ने उन्हें महाराणा प्रताप द्वारा स्वंतत्रता के लिए दिए गए बलिदान एवं मेवाड़ की कला, शिक्षा, चिकित्सा, धर्म की जानकारियों से अवगत कराया।

इसके पश्चात बांग्लादेश के गृहमंत्री महाराणा प्रताप स्मारक समिति मोती मगरी पहुंचे और प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की भव्य अश्वारूढ़ प्रतिमा के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की। इससे पूर्व समिति के सचिव युद्धवीरसिंह शक्तावत ने उनका स्वागत किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।